श्मीर यात्रा



॥ वन्देमातरम ॥

मेरी काश्मीर यात्रा ।

लेखक —

पं० मथुराप्रसाद पाण्डे, कानपुर ।

प्रकाशक —

पं० ओङ्कारेश्वर दीक्षित, कानपुर ।

लाला भगवानदास गुप्त के प्रबन्ध से कमर्शल प्रेस,
जुही-कलां, कानपुर में मुद्रित ।

प्रथमबार १०००

सं० १९७९ वि०

मू० ॥=) आना

पुस्तक मिलने का पता —

ओङ्कारेश्वर दीक्षित,

खद्दर-भाण्डार, बादशाही-नाका, कानपुर।

चार शब्द

काश्मीर प्रकृति का मूर्त्तिवत काश्मीर हमारे देश का वह शीर्ष-स्थान है जिसे देख कर कहा जा सकता है कि प्रकृति के स्वयं किये गये श्रृङ्गार में जो कमी रह गई थी मानों ईश्वर ने स्वयं अपने कुशल हाथों से श्रृङ्गार की उस कमी को सँवार दिया है। काश्मीर पृथ्वी का वह प्रदेश है जहाँ सौन्दर्य्य-पिपासुओं की पिपासा शान्त हो जाती है, योगी अपनी सिद्धि को पाया-सा अनुभव करने लगते हैं और साधारण सांसारिक मनुष्य यहाँ आकर अपने मनुष्य जीवन को सफल समझते हैं।

जिसने एक बार भी इस देश को जी भर कर देखा है वही कह सकता है कि इसको Happy Valley जो नाम दिया गया है कितना सार्थक है। यहां के पर्व्वतों की सफ़ेद चोटियां, उदय होता हुआ प्रातःकालीन सूर्य्य, बर्फीले मैदान, केसर के चलते फिरते खेत, झील के चारों ओर की बस्ती तथा स्वयं झीलमें बसा हुआ चलता फिरता नगर और इसके अतिरिक्त वहाँ के निवासियों को जिसने गम्भीर दृष्टि से देखा है; उसका यह कहना उचित ही है कि यदि पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है तो काश्मीर, यदि फ़ारस के जगत् प्रसिद्ध कवि ओमर खय्याम ने काश्मीर देखा होता तो वे मदिरा रोटी के टुकड़े और अपनी प्रेमिका के साथ एकान्तस्थल के वास को स्वर्ग मानने के बजाय काश्मीर के किसी भी स्थल को स्वर्ग मान लेते।

इसी स्वर्ग को देखने के लिए हम अपने पाठकों को उत्साहित करते हैं और इसी उद्देश्य से यह पुस्तक लिखी भी गई है। आशा है कि यह पुस्तक यात्रियों को मार्ग-प्रदर्शक का काम देगी और विद्यार्थियों को विशेष कर उपयोगी होगी।

कानपुर
१-४-१९२२।

विनीत—
मथुराप्रसाद पाण्डेय।

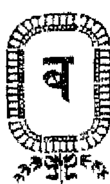
सूची ।



॥ श्रीहरिः ॥

मेरी काश्मीर यात्रा

१—आगरे की ओर।



बहुत दिनों से मेरा विचार पहाड़ी दृश्य देखने का था। मैंने सुना था, कि भारतवर्ष प्रकृति के सौन्दर्य्य का भाण्डार है और वह अनुपम भाण्डार उत्तरोत्तर पर्व्वत-श्रेणियों के मध्य में काश्मीर प्रदेश ही है।

अगस्त मास के प्रारम्भ में मैं अपने निवासस्थान जमालपुर से आगरे की ओर रवाना हुआ। मार्ग में मैंने सोचा कि मेरी यात्रा एक ऐसे प्रदेश की प्राकृतिक सौन्दर्य्य के देखने के लिए हो रही है, जिसे प्रायः लिखे-पढ़े पुरुष "भारतवर्ष का इंग्लिस्तान" कहा करते हैं; इस लिए मुझे

आवश्यकता प्रतीत हुई कि किसी सुयोग्य पुरुष को साथ में ले लूँ, जो कि विदेश में मित्र का काम दे, और मेरे आनन्द के अनुभव में भाग ले। यह सोच विचार कर मैं कानपुर में उतर पड़ा। दूसरे ही दिन प्रातःकाल मैंने शुभ्र-सलिला पतितपावनी श्री गंगाजी के स्नान किये। स्नान कर के लौटते समय भाग्यवशात् मेरे पूर्व्व परिचित मित्र पण्डित रामदयाल जी वाजपेयी कानपुर निवासी से मेरी भेंट हो गई। वार्त्तालाप करने पर, पण्डित जी भी मेरे साथ चलने को तैयार हो गए।

हमारी यह उत्तर प्रदेश की यात्रा तारीख १० अगस्त सन् १९२० को आरम्भ हुई। सायङ्काल की छः बजे की एक्सप्रेस से जाना निश्चित हुआ। यात्रारम्भ करने के दिन साढ़े चार बज चुका था, और मेरे मित्र पण्डित रामदयाल जी का पता अब तक न था। कुछ देर उपरान्त आप का शुभागमन एक थर्ड क्लास टुटैल इक्के पर हुआ। मैंने पण्डित जी से पूछा कि क्या वे तैयार होकर आये हैं ? उन्होंने उत्तर दिया कि ट्रेन का समय आ गया है, और हम लोगों को बहुत शीघ्र चल देना चाहिये। मैं भी तैयार ही था, ज्यों त्यों अपना ट्रंक, बिस्तर, झोला, छाता और डण्डा सम्हाल कर उसी इक्के पर बैठ गया। थोड़ी देर में ई० आई० आर० स्टेशन आ पहुंची। इक्के से उतर कर मैंने

वाजपेयी को टिकट खरीदने के लिए बुकिंग आफ़िस भेजा। वाजपेयी जी नई उमंग में भरे ही हुए थे; दौड़ते हाँफते बुकिंग आफिस पहुंचे, परन्तु यहां टिकट का मिल जाना आसान बात नहीं। दीहातियों के धक्के खा कर बड़ी मुश्किल से बेचारे खिड़की तक पहुंचे— गिड़गिड़ा कर बाबू से टिकट मांगे। बाबू ने कहा — टिकट नहीं मिल सकते; क्योंकि गाड़ी आने का समय हो चुका है। वाजपेयी जी को बहुत देर लग जाने के कारण मैं स्वयं गया। देखा कि यहां मामला ही दूसरा है। समयानुसार कार्य्य करने से टिकट मिल गये। अपना सामान इत्यादि लेकर हम प्लेटफ़ार्म पर आये। देखा तो सारी स्टेशन बिजली की रोशनी से चमचमा रही है। मैं भी नई उमङ्गों और उत्साहों से भरा हुआ था, वाजपेयी जी से वार्त्तालाप करते हुए गाड़ी की प्रतीक्षा करने लगा।

कुछ मिनिटों के बाद गाड़ी के आने की सूचना मिली और तत्काल ही ट्रेन अपने मुख से धुएँ को आकाश की ओर फेंकती हुई प्लेटफार्म पर आ जमी। हम लोगों ने बड़े प्रेम से श्रीगणेश का स्मरण किया और गाड़ी में जा बैठे। चित्त दूर देश सम्बन्धी यात्राओं की चिन्ता में था, परन्तु कभी कभी नूतन दृश्यों के देखने के विचार से एक प्रकार की आनन्द की लहर उठने लगती थी। कभी कभी बिदेश

में अपरिचित होने के कारण विदेश के सङ्कटों का स्व देखने लगते और कभी कभी अनुपम दृश्यों का ध्यान कर के उन सङ्कटों को भूल जाते थे । अब हमारी गाड़ी पवन वेग से आगरे की ओर दौड़ी । बहुत से छोटे बड़े स्टेशनों को पार करती हुई हमारी गाड़ी रात्रि के दस बजे इटावा पहुंची । यहां पानी लेकर अपने पूरे वेग से ट्रेन ने भयङ्कर स्वरूप धारण किया । खिड़की के मार्ग से शीतल समीर ने प्रवेश कर हमारे शरीरों को आलिङ्गन किया जिसके लगते ही हम निद्रा देवी के वशीभूत होगए । जब हमारी गाड़ी टूंडला जङ्कशन पर पहुंची, अञ्जनों की प्रतिध्वनि से हमारी निद्रा भंग हो गई । घड़ी पर दृष्टि पड़ी तो विदित हुआ कि एक बज कर पैंतालीस मिनिट हो चुके हैं। यहां से आगरे के यात्रियों को दूसरी गाड़ी बदलनी पड़ती है अतएव मैं और वाजपेयी जी उतर पड़े ।

आगरा जाने वाली गाड़ी को चार घण्टे का समय था। मेरा विचार हुआ कि विश्राम के निमित्त मुसाफ़िरख़ाने चला जाना उत्तम होगा । तुरन्त वहां पहुंचे, थोड़ी देर विश्राम किया । परन्तु वहां एक विलक्षण बात देखने में आई । गणेशवाहनों ने मुसाफ़िरख़ाने को स्वयं अपना विश्रामगृह बना रक्खा था, चारों ओर चूहे घुड़दौड़ मचा रहे थे, जिन की झपट के मारे एक जगह बैठा रहना बड़ा कठिन था ।

हमारे दो एक कपड़ों पर चूहों ने अपने तीव्र दांतों की परीक्षा की, परन्तु हमारे सचेत रहने से उनकी विशेष दाल गलने न पाई । अस्तु, किसी प्रकार राम राम करते हुए आगरा जानेवाली गाड़ी का समय आया । स्टेशन के परिचारकों ने यात्रियों को सूचना देने के लिए घण्टी बजाई। समय पांच बजने के पश्चात् का हो आया । पूर्व्व दिशा से भगवान भास्कर अपनी सुनहली किरणों से आकाश में लालिमा प्रकाशित करने लगे । हम अपने सामान सहित प्लेटफ़ार्म पर आये और आगरा जानेवाली गाड़ी में सवार हो गये । तारीख़ ग्यारह अगस्त को प्रातःकाल साढ़े छः बजे के समय हम आगरा फ़ोर्ट स्टेशन पर आ पहुंचे ।



२—आगरे में ।



स्टेशन के निकट ही मुग़ल सम्राट् अकबर का बनवाया हुआ प्रसिद्ध लाल पत्थर का विशाल दुर्ग दृष्टिगोचर होता है । इस दुर्ग के भीतर दीवाने-आम, दीवाने-ख़ास और मोती महल इत्यादि अनेक प्रसिद्ध महल

हैं। स्टेशन से लगभग २५० गज की दूरी पर लाला रामकिशनदास की धर्म्मशाला में हम ठहरे। यात्रियों की न्यूनता के कारण धर्म्मशाला का बहुत सा भाग खाली था, इसलिए हमको ऊपर का सब से अच्छा स्थान मिल गया। सामान इत्यादि रख कर हमने धर्म्मशाले के समीपवर्त्ती स्थानों को देखा जिससे खान-पान की वस्तुएं सरलता से मिल सके। तत्काल नित्य कर्म्मादि से निवृत्त हो भोजन बनाने की हम चिन्ता में मग्न हुए। भोजन बनाने की कोठरी नीचे के भाग में थी। वहां जाकर देखने पर विदित हुआ कि स्थान बिल्कुल अपरिष्कार है। कान्यकुब्ज श्रेणी के ब्राह्मणों के लिए यह स्थान विशेष कर कष्टदायी है।

भोजनादि से निवृत्त होकर हमने कुछ काल विश्राम किया; तदुपरान्त ऐतिहासिक घटनास्थलों को देखने निकले। सब से पहले स्टेशन को पार किया, इसके बाद क़िले के प्रधान फाटक पर पहुंचे। यहाँ एक गौरवर्ण योरोपीय सिपाही पहरा दे रहा था। उससे पूँछने पर मालूम हुआ कि बिना छावनी के उच्च पदाधिकारी अफ़सर या स्टेशन स्टाफ़ आफ़िसर के हस्ताक्षरयुक्त पास के क़िला देखने की आज्ञा नहीं मिल सकती। हम लोगों ने तत्काल एक किराए का ताँगा किया और छावनी की राह ली। छावनी पहुंचने पर ब्रिगेडियर साहब के बँगले का पता लगाया। अभाग्यवश ब्रिगेडियर साहब

कहीं बाहर चले गये थे, इस कारण पास न मिल सका; अस्तु, हमको शोक है कि हम क़िले की इमारतों को देखने से वञ्चित रहे !

२—ताज महल ।



क़िला देखने से निराश हो कर हमने अपने तांगे को ताजमहल की तरफ़ मोड़ा । बहुत से सुन्दर उपवनों को पार कर के हम मुग़ल सम्राट् शाहजहां के बनवाए हुए विश्वविख्यात ताजमहल के फाटक पर पहुंचे । इस प्रसिद्ध इमारत का सामना करनेवाली और कोई दूसरी इमारत संसार में नहीं है। इतिहास साक्षी है कि इस इमारत के बनने में लगभग तीस वर्ष लगे थे और क़रीब साढ़े तीन करोड़ रुपया ख़र्च हुआ था । ताजमहल का दूसरा नाम ताजबीबी का रोज़ा भी है । यह प्रसिद्ध महल आगरे से कोस भर के अन्तर पर यमुना नदी के दाहिने किनारे पर बना हुआ है ।

ताजमहल के प्रथम फाटक पर पहुंचते ही दोनों ओर एक ही नमूने की बनी हुई कई दुकानें दिखाई देती हैं । ज्योंहीं

हम प्रथम फाटक के अन्दर घुसे और कुछ दूर चले, हमको मालूम हुआ कि हम ताजमहल के एक चौड़े घेरे में जा पहुंचे। दूसरे फाटक में प्रवेश करते ही हमारी दृष्टि सामने बने हुए सुन्दर बेलबूटेदार, अनेक प्रकार के उत्तमोत्तम छोटे बड़े वृक्षों द्वारा सुशोभित उपवन के मध्य में ताजमहल पर पड़ी। बाग़ में पत्थर की चार सड़कें बनी हुई हैं। दूसरे फाटक से ताजमहल के रौजे तक पत्थर का एक लम्बा हौज़ बना हुआ है। हौज़ के मध्य में लगभग सवा सौ फ़ौव्वारे बने हुए हैं। इस हौज़ से ताजमहल की ड्योढ़ी तक दोनों तरफ़ पत्थर की स्वच्छ सड़कें बनी हुई हैं। सड़कें दोनों तरफ़ रंग बिरंगे पुष्पों के आभरणों से बिभूषित हैं। ताजमहल के चारों तरफ़ एक लम्बा चौड़ा सफ़ेद मार्बल का चबूतरा बना हुआ है। इस चबूतरे के मध्य में ताज की विशाल इमारत अपना मस्तक ऊंचा उठाए हुए वृद्ध भारत की निर्माण-कौशल-कला का परिचय सारे संसार को आज भी दे रही है। इमारत के चारों कोनों पर चार बड़ी बड़ी मीनारें खड़ी हैं।

इस विशाल भवन में प्रवेश करने के पहले हम कुछ मिनिटों तक स्तब्ध खड़े रहे। पुनः मैंने और वाजपेयी जी ने मक़बरे में प्रवेश किया। मक़बरे की स्वच्छता के लिए दो मुसल्मान नौकर नियुक्त हैं। एक नौकर को हमने मक़बरे का भीतरी भाग दिखाने के लिए अपने साथ ले लिया।

सब से पहले हम तहखाने में गये जहां अंधेरा था। यहां हमको भारत के सुप्रसिद्ध बादशाह शाहजहां और उनकी प्यारी बेगम मुमताज़ महल की क़ब्रें देख पड़ीं। क़ब्रों पर बहुमूल्य पत्थरों के द्वारा पच्चीकारी का काम बना हुआ है। तहखाने के ऊपर और भी दो मंजिलें हैं। यहां चारों ओर पत्थर की जालीदार टट्टियां बनी हुई हैं, जिन में श्वेत मार्बल पत्थरों द्वारा नाना प्रकार की लताएं बनाई गई हैं। काले पत्थरों के द्वारा अरबी भाषा में बहुत सुन्दरता के साथ कुरान की आयतें भी लिखी गई हैं। किसी किसी कमरे में कांच के दरवाजे लगाए गए हैं। कुछ कमरों में खड़े हो कर यमुना जी की ओर दृष्टि फेंकने पर उस पार का दृश्य अति मनोहर देख पड़ता है। एक कमरे में बैठ कर कुछ देर हम आपस में बातचीत करते रहे। हमारा चित्त ताजमहल की अलौकिक शोभा को देख कर मुग्ध हो गया। इस महल में विशेष बात ध्यान देने योग्य यह है, कि भीतरी बाहरी कुल हिस्सा, सहित मीनरों के सब श्वेत मार्बल से बना हुआ है। इसकी शुभ्रता पर ध्यान देने से योरप ऐसे सभ्य देश के यात्री भी चकित हो जाते हैं। ताजमहल के दोनों ओर लाल पत्थर की दो बड़ी इमारतें बनी हुई हैं। अब हम यमुना की ओर तिमंजिली बनी हुई मीनार पर चढ़े। ऊपर से आगरा नगर की शोभा देखते बन पड़ती है। मीनार

की ऊंचाई अधिक होने के कारण यहां वायु हमारे शरीरों को बड़ी जोर से आलिङ्गन करने लगी। नीचे की ओर दृष्टि डालते ही चित्त प्रफुल्लित हो उठा—देखा कि यमुना जी की लहरें ताज के पेंदे से टकरा कर बड़े वेग से बह रही हैं। लहरों पर कुछ देर लगातार दृष्टि डाले रहने से मालूम हुआ, कि मानों यमुना जी ताज की सुन्दरता पर मुग्ध हो कर अपने लहर रूपी हाथों द्वारा उसका आलिङ्गन कर रही हैं। संसार के भिन्न भिन्न देशवासी आज भी इस सद्मिलन को देखने के लिए आते हैं। इमारत की सुन्दरता पर मुग्ध होने से और विचार करने से मेरे मुंह से ये शब्द सहसा निकल पड़े, "हे ताज! तेरी प्रसिद्ध कीर्त्ति ने हमको अपनी मातृ-भूमि बङ्गाल से ला कर इतनी दूर फेंका है। वास्तव में तेरी सुन्दरता की उपमा देनेवाली कोई दूसरी इमारत संसार में नहीं होगी।" बहुत देर तक आसपास की शोभा को देख कर हम मीनार से नीचे उतरे। फाटकों को पार कर के अपने तांगे में सवार हुए। हमारा तांगा अपनी साधारण धीमी चाल से शहर की ओर चल दिया। देखते ही देखते ताजमहल हमारी दृष्टि से वृक्षों की ओट में बिलीन हो गया। कुछ मिनिटों के बाद हम स्टेशन के समीप आ पहुंचे। तांगेवाले को बिदा कर शहर की ओर बढ़े। यहां हमने सोने चांदी का तथा पत्थरों का काम बहुत बढ़िया देखा। बाजार पुराने ढंग

का बना हुआ है और दुकानें बिल्कुल पास पास बनी हुई हैं। सारे शहर में पम्प द्वारा जमुनाजल दौड़ा करता है। मकान प्रायः लाल पत्थर के बने हुए हैं। म्युनिसिपेलिटी के प्रबन्ध से सड़कों पर स्वच्छता अच्छी रहती है। शहर के बाहर एक से एक सुन्दर बगीचे लगे हुए हैं, जिनको देख कर अवध की राजधानी लखनऊ की याद आती है। यहां अंगरेजी शिक्षा देने के लिए कई स्कूल तथा कालिज हैं। एक मेडिकल कालिज भी है, जहां डाक्टरी शिक्षा दी जाती है। जुम्मा मसजिद नामक एक इमारत रेलवे स्टेशन के पास ही है जिसके सुनहले पानी चढ़े हुए सुसज्जित गुम्बज बहुत दिव्य मालूम होते हैं। यहां कई एक अन्य ऐतिहासिक स्थान भी देखने योग्य हैं, जिन में से एक मोती मसजिद भी है। उसकी सुन्दरता की समानता आज तक कोई पूजागृह नहीं कर सका है। हम बहुत देर घूमने के बाद लगभग तीसरे पहर अपनी धर्म्मशाला में पहुंचे। जल-पान कर कुछ देर विश्राम किया तत्पश्चात् दिल्ली जाने के लिए स्टेशन को प्रस्थान किया। गाड़ी पर सवार हो कर रात को साढ़े आठ बजे टूंडला जंक्शन पहुंचे। दिल्ली जाने वाली गाड़ी को दो घण्टे की देरी देख कर हम स्टेशन में कुछ देर टहलते रहे। साढ़े बारह बजे की ट्रेन अपने नियमित समय पर आ पहुंची, जिसमें बैठ कर हम दिल्ली की ओर

रवाना हुए । मार्ग में मैंने बाजपेयी जी से दिल्ली की देखी हुई ऐतिहासिक इमारतों पर बात चीत शुरू की । परन्तु वे कब अपनी राय देने वाले थे । वे दिन भर की थकावट के कारण निद्रा देवी की आराधना करने लगे । गाड़ी में भीड़ इतनी ठसाठस थी, कि पैर तक लम्बा करना मुश्किल था । एक छोटी स्टेशन पर गाड़ी कुछ खाली हुई । अब मैं और बाजपेयी जी दोनों निद्रा के वशीभूत हुए । रात्रि में अनेक स्टेशनों को पार करती हुई हमारी गाड़ी प्रातःकाल साढ़े आठ बजे भारत की राजधानी दिल्ली पहुंची । हम अपना सामान इत्यादि लेकर स्टेशन के बाहर आये ।



४—दिल्ली ।

हम लक्ष्मीनारायण जी के धर्म्मशाले में पहुंचे । यहां यात्रियों की इतनी ज्यादा भरमार थी कि जगह मिलना मुश्किल था । अस्तु, हम चांदनी चौक में घण्टा घर के पास पंचायती योगीबाड़े में आ ठहरे । नित्य-कर्म्मादि से निवृत्त हो विश्राम के पश्चात् हम जामामसजिद, क़िला इत्यादि प्रसिद्ध स्थान देखने निकले । यह नगर प्राचीन

समय में तीन ओर प्राचीर द्वारा घिरा हुआ था। चौथी ओर यमुना जी थीं। वर्तमान समय में प्राचीर कई स्थानों में टूट कर बुरी दशा में हो गए हैं और कई जगह वर्तमान आवश्यकता के अनुसार तोड़ भी डाले गए हैं। इन प्राचीरों में पहले दस फाटक थे। इन पर किसी किसी में निम्नलिखित शब्द भी हैं, "सदर देहली दरवाज़ा," "अजमेरी," "ग्वालियरी," "जैपुरी," "क़ाबुली" और "लाहौरी" इत्यादि। सड़कों के दोनों ओर क़तारबन्द वृक्ष लगे हुए हैं। शहर की शोभा निराली है। सायंकाल के समय बिजली के प्रकाश में नगर की शोभा द्विगुन हो जाती है। शहर के बाज़ारों में मुख्य चांदनीचौक, दरीबा, लाल-कुंआं इत्यादि हैं। शहर में सब से सुविधा की बात यह देखने में आई कि जगह जगह प्यासों के लिए पानी पीने के प्याऊ बने हुए हैं। शहर की प्रधान सड़कों पर ट्राम गाड़ी चलती है। हम चांदनीचौक होते हुए क़िले के प्रधान फाटक पर आ पहुंचे। क़िले के निकट क़िले में जाने का पास एक आना मूल्य देने पर मिलता है। हमने पास ले कर क़िले में प्रवेश किया।

क़िला यमुना नदी के किनारे पर उत्तर से दक्षिण तक बत्तीस सौ फ़ीट की लम्बाई में तथा पूर्व्व से पश्चिम तक सोलह सौ फ़ीट की चौड़ाई में दिल्ली के प्रसिद्ध क़िले के

नाम से निर्मित है । इस क़िले को बहुत से लोग, मुग़ल बादशाहों का शाही महल, के नाम से भी पुकारते हैं । क़िले की पश्चिम की दीवार में लाहौरी फाटक तथा दक्षिण की दीवार में दिल्ली फाटक है । दोनों फाटकों की बनावट लगभग एक ही सी है । लाहौरी फाटक के मध्य में मिह्-राबदार दो मंजिली बड़ी इमारतें हैं । फाटक के भीतर दोनों ओर कई दुकानें एक ही नमूने की बनी हुई हैं, इसी फाटक से हमने क़िले में प्रवेश किया । क़िले में कई एक इमारतें हैं, जिन में से मुख्य नौबतख़ाना, दीवाने-आम, दीवाने-ख़ास, मोती मसजिद हैं । सुना जाता है कि सन् १८५७ के बलवे के पश्चात् से क़िले के महल का सब से बड़ा भाग सर-कार ने तोड़ कर बेरिक्स बना दिया है, जिन में अंग्रेज़ी सेना रहती है । दीवाने-आम नामक इमारत लाल पत्थर की बनी हुई है, जो एक सौ पचहत्तर फ़ीट लम्बी और लगभग एक सौ पचास फ़ीट चौड़ी है । यह इमारत तीन ओर से खुली हुई है और इस में एक सौ छयालीस खम्भे हैं । पूर्व की ओर दीवार के पास ही तीन गज की ऊंचाई पर पत्थर का एक राजसी सिंहासन बना हुआ है । जिस में चारों खम्भों पर संगमर्मर के पत्थर का काम बना हुआ है । सिंहासन के पीछे दीवार में लाल रंग के फल फूल तथा जान-वरों के चित्र पच्चीकारी के काम में बहुत अच्छे बने हुए

हैं। इन चित्रों में विशेष कर उल्लेख करने योग्य चित्र तानसेन गायक का है। इसी सिंहासन के ऊपर किसी समय भारतवर्ष का बहु मूल्य रत्नजटित मयूरसिंहासन रक्खा रहता था। कालचक्र के परिवर्तन से उसका कुछ भाग इस समय फ़ारिस में सुना जाता है। सिंहासन के स्थान के पीछे ही कई कोठरियां हैं। सुनते हैं कि इन्हीं कोठरियों में मुग़ल बादशाह जलपान किया करते थे। यहां से हम दीवाने-ख़ास देखने के लिए चले। इस इमारत की भी चित्रकारी तथा बनावट संसार को चकित कर रही है। इसकी लम्बाई एक सौ पचास फ़ीट और चौड़ाई सौ फ़ीट के लगभग है। इमारत में संगमर्मर का बढ़िया सायबान है, छत के चारों किनारों पर मार्बल पत्थर के गुम्बज बने हुए हैं। पूर्व की ओर यमुना नदी की तरफ़ श्वेत मार्बल की जालीदार टट्टियां बनी हुई हैं। दीवाने-ख़ास की भीतरी कारीगरी को देख कर सभ्य संसार के निवासी आज भी दांतों तले अंगुली दबाते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि पहले इस इमारत में नाना प्रकार के रत्न जड़े हुए थे, परन्तु समय के फेर से आज वे नहीं दिखाई पड़ते। किसी समय यह महल पृथ्वी-तल पर स्वर्गीय महल समझा जाता था और इसमें सारे संसार की बहुमूल्य सामग्री रहती थी। इसको देख कर हम ने समन बुर्ज, स्नानगृह, मोती मसजिद और सुनहली

मसजिद की शोभा देखी। दीवाने-ख़ास से दक्षिण की ओर लगभग पचास क़दम की दूरी पर हमने एक पक्के गृह में प्रवेश किया। यहां प्राचीन समय की कुछ दर्शनीय चीज़ों का संग्रह है। इसे देख कर हम क़िले के बाहर आये। धूप अधिक होने के कारण हम गरमी से विह्वल हो गये थे, इसलिए हमने आज और किसी दूसरी इमारत को देखने का विचार नहीं किया। हम सीधे अपने ठहरे हुए स्थान पर आये और अधिक थके हुए होने के कारण बैठ कर विश्राम करने लगे।

रात्रि व्यतीत होने पर दूसरे दिन जब हम उठे, हमने जामामसजिद देखने का निश्चय किया। यह मसजिद चाँदनी चौक से दक्षिण की तरफ़ घण्टा घर से थोड़ी ही दूरी पर है। इसकी गणना भारतवर्ष की प्रसिद्ध मस्जिदों में की जाती है। इस की लम्बाई एक सौ पचास गज तथा चौड़ाई भी लगभग इतनी ही है। पश्चिम की दिशा को छोड़ कर तीनों ओर फाटक लगे हुए हैं। प्रधान फाटक सड़क से छत्तीस सीढ़ियों की ऊंचाई पर बना हुआ है। घेरे के अन्दर मसजिद के मुख्य भाग की लम्बाई साढ़े छयासी गज और चौड़ाई सवा इकतीस गज है। दीवालों में चमकीले मार्बल पत्थर के टुकड़े लगे हुए हैं। सफ़ेद संगमर्मर पर काले पत्थरों के द्वारा अरबी में लेख भी लिखे

गए हैं। मसजिद की फर्श पर नमाज पढ़ने की जगह काले और सफ़ेद मार्बल के टुकड़ों के द्वारा क्यारियां बनाई गई हैं। मसजिद के बीचोंबीच सफ़ेद मार्बल की एक सुन्दर चौकी रखी हुई है, जिस पर खुतबा पढ़ा जाता है। मसजिद के ऊपरी भाग में छोटे बड़े बहुतेरे गुम्बज बने हुए हैं; जिनमें लाल पत्थर के पहलदार दो बड़े बुर्ज भी हैं जहां सफ़ेद मार्बल के द्वारा खड़ी रेखाएं बनी हुई हैं।

बुर्ज के ऊपर चढ़ने के लिए अन्दर से चक्करदार सीढ़ियां बनी हुई हैं। खास मसजिद से निकल कर हम बुर्ज के ऊपर चढ़ने लगे। जब उसकी सीमा पर पहुंचे तो सारा शहर दिखाई देने लगा। जब हम नीचे थे, गरमी अधिक होने से घबड़ा रहे थे। परन्तु ज्योंही हम ऊपर पहुंचे, शीतल हवा के लगने से चित्त प्रसन्न हो गया। यहां से कुछ देर तक हम शहर का दृश्य देखते रहे, और आपस में बातचीत करते रहे। यहां पांच छः मनुष्यों के आराम से बैठने योग्य काफी जगह है। क़िला यहां से बहुत अच्छा दिखाई पड़ता है। यही नहीं, किन्तु दिल्ली शहर से बारह मील की दूरी पर बनी हुई कुतुबमीनार का भी कुछ अंश दृष्टिगोचर होता है। चारों ओर पूर्णतया दृष्टि दौड़ा कर हमने नीचे उतरना आरम्भ किया। घेरे के अन्दर खास मसजिद के सामने एक बहुत बड़ा आंगन है जिस के बीचोंबीच

स्वच्छ जल से भरा हुआ एक चौकोना हौज़ है । नमाज़ के पहले इस हौज़ में "वज़ू" किया जाता है, अर्थात् हाथ पैर धोए जाते हैं । खास मसजिद के तीन ओर मेहराब-दार एक ही नमूने के मकान बने हुए हैं । घेरे के चारों कोनों के ऊपर मार्बल पत्थर की गुम्बज़दार एक एक छोटी बारहदरी बनी हुई है । मसजिद को देखते ही देखते हमको शाम हो गई । इसलिए समय के अभाव से हम को बाधित हो कर अपने स्थान पर लौटना पड़ा । तीसरे दिन हमने कुतुबमीनार देखने का विचार किया । यह मीनार वर्तमान दिल्ली नगर से ग्यारह मील से कुछ अधिक दूरी पर स्थित है । दस बजे के पहले ही भोजन आदि से निवृत्त हो कर हम घण्टा-घर के पास आये । एक तांगा किराए किया, जिस में बैठ कर मीनार की ओर रवाना हुए । राह में हमको कई ऐतिहासिक इमारतें मिलीं, जिनको देखते हुए हम आगे बढ़े । सब से पहले हमको महाराज युधिष्ठिर का बनवाया हुआ प्राचीन क़िला मिला । क़िला बहुत प्राचीन होने से जीर्णावस्था में है, और कई जगह बहुत से अंश टूट भी गए हैं । दक्षिण और पश्चिम की तरफ़ क़िले के फाटक खुले रहते हैं । हम क़िला, कोना मसजिद, निजामुद्दीन औलिया का मक़बरा इत्यादि देखते हुए मुग़ल सम्राट् हुमायूं के मक़बरे के पास पहुंचे । इसके चारों

ओर ऊँची दीवारें हैं। सामने एक बड़ा लाल पत्थर का फाटक मिलता है। फाटक को पार करने के बाद एक दरवाज़े से बगीचे में प्रवेश करना पड़ता है। बगीचे में कुछ दूर चलते ही मक़बरे की विशाल इमारत दिखाई पड़ती है। मक़बरे के बाग़ में एक सुन्दर हौज़ बना हुआ है। इमारत मे हुमायूँ नरेश की संगमर्मर के पत्थर की क़ब्र है, और इसके पास ही दो और दूसरी क़ब्रें सफ़ेद मार्बल की बनी हुई हैं। पास की क़ब्रों में से एक आलमगीर की और दूसरी फ़र्रुखसियर की है। लोगों का कथन है कि इस मक़बरे के बनवाने में पन्द्रह लाख रुपया खर्च हुआ था। बादशाह हुमायूँ के मक़बरे से क मील पश्चिम तक बहुत सी शाही घराने की क़ब्रें तथा मसजिदें मिलती हैं। इन सब को देखते हुए हम क़ुतुबमीनार के निकट पहुंचे। तांगे से उतर कर मन की भावनाओं की तरंग में हम मीनार के नीचे जाकर बैठ गए। कुछ देर विश्राम करने के बाद हम उठे, और मीनार देखने के लिए चले। इस मीनार की ऊँचाई का सामना करने वाली भारतवर्ष में कदाचित् ही कोई दूसरी मीनार होगी। लोग कहते हैं कि यह मीनार क़ुतुबुद्दीन ऐबक ने बनवाई थी, परन्तु हमको ध्यानपूर्वक परीक्षा करने से मालूम हुआ कि कदाचित् इस मीनार के बनवाने वाले हमारे महाराज पृथ्वीराज चौहान होंगे और

उनके समय में इसका नाम यमुनास्तम्भ होगा। इस बात के प्रमाण नीचे लिखे हुए पाली भाषा के सम्वत और मूर्तियां हैं। प्राचीन स्तम्भों के भग्नावशेष से यह भी पता लगता है कि इस स्थान पर पृथ्वीराज का देव मन्दिर था। स्तम्भों में कई प्रकार की मूर्तियों के चित्र हैं। हमारा अनुमान है कि दूसरी जगहों की तरह यहां भी यवन बादशाहों ने देवालय को नष्ट करके उसकी जगह पर मसजिद बनवाई है जिसे वर्तमान समय में कुतुब इस्लाम मसजिद कहते हैं। मसजिद के मध्य में आज तक महाराज धव का बनवाया हुआ लोहस्तम्भ खड़ा है जिसकी लम्बाई छः या सात गज़ है। इमारत के इन टूटे फूटे रहे सहे चिन्हों पर दृष्टि डालने से प्राचीन समय के हिन्दुओं की कला कौशलता की प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जाता। हमने मीनार के ऊपर चढ़ना आरम्भ किया। मीनार के पांच खंड हैं और ऊपर से नीचे तक कुल तीन सौ छिहत्तर चक्करदार सीढ़ियां हैं। प्रत्येक खंड में विश्राम करने के लिए खिड़कियाँ बनी हुई हैं और उनके बाहर छोटे छोटे छज्जे हैं। छज्जों के चारों ओर रेलिंग लगे हुए हैं, जिनसे गिरने का बहुत कम भय है। हम लोग सीढ़ियों से चढ़कर ऊपर पहुंचे। मीनार की उंचाई इतनी अधिक है कि पृथ्वी की ओर देखते ही शरीर रोमाञ्चित हो उठता है। एक स्थान

पर रेलिंग पकड़ कर हम बैठ गए जहां हवा के झोंके हमारे शरीर में लगने लगे। सीढ़ियों से चढ़ते चढ़ते हमारे पैर इतने भर आए थे कि हम आसानी से नहीं चल सकते थे, अतएव कुछ विश्राम करने की आवश्यकता पड़ी। मुझे बैठते ही अपने स्कूल-जीवन की सुध आ गई। जब मैंने भारतवर्ष के इतिहास में कुतुबमीनार का वर्णन पढ़ा था। जिस समय मैंने कुतुबमीनार का इतिहास पढ़ा था, मुझे कब मालूम था, कि एक दिन इसके ऊपर चढ़ने का मुझे भी सौभाग्य प्राप्त होगा। इस प्रकार के अनेक भाव मेरे मन में उठने लगे। लगभग एक घण्टा विश्राम करने के बाद हम मीनार के नीचे उतर आये। मीनार के पास ही योगमाया का एक प्राचीन मन्दिर है जिसे देखने के लिए हम चले। मन्दिर मीनार के समीप होने के कारण हमको अधिक न चलना पड़ा। लोग कहते हैं कि वर्त्तमान मन्दिर को बने लगभग चौरानवे वर्ष हुए हैं। यहाँ प्रत्येक सप्ताह एक मेला लगता है जब कि मूर्त्ति सजाई जाती है। अनुमान से मूर्त्ति कौरव पाण्डवों के समय की ज्ञात होती है। मन्दिर के समीप बादशाह अल्तमश का उजड़ा हुआ महल तथा बादशाही फाटक है। कुछ देर इन स्थानों को देखते हुए हम घूमते रहे। तत्पश्चात् तांगे में सवार हो कर चल दिये। रास्ते में अन्य प्राचीन स्थान हमको मिले जिनको देखते हुए हम अपने स्थान पर

पहुंचे। दिल्ली नगर में कई दिन रह कर हमने पन्द्रह अगस्त को यहां से चलने का विचार किया। रात्रि की ट्रेन से हम भारत की राजधानी से बिदा हुए और हमारी गाड़ी अमृतसर की ओर चल दी। जितना अधिक हमारी गाड़ी अमृतसर की तरफ़ बढ़ती जाती थी, उतने ही अधिक पञ्जाबियों के वृन्द हमारी गाड़ी में दिखाई देते थे।



५—अमृतसर।

दिन में डेढ़ बजे के लगभग दूसरे दिन हम अमृतसर स्टेशन पर पहुंचे। प्लेटफार्म पर उतरते ही हम को जलियानवाले बाग़ की घटनाएं याद हो आईं। स्टेशन के बाहर आ कर हमने धर्म्मशाला का पता लगाया। कई सज्जनों से पूछने पर मालूम हुआ कि पास ही एक धर्म्मशाला है। हमने एक कुली अपने सामान उठाने को लिया और धर्म्मशाले में पहुंचे। मकान की टूटी फूटी दशा देख कर इसमें ठहरने की इच्छा जाती रही। एक कोठरी में अपना सामान बन्द कर के हम अन्यत्र ठहरने का स्थान खोजने निकले। सूर्य्यनारायण की प्रचण्ड किरणों के ताप से

हम बहुत मुरझाए हुए थे, और जिस समय से दिल्ली नगर से विदा हुए थे, अब तक कोई चीज खाने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ था। कुछ दूर चल कर हमको बेचैनी मालूम हुई इस कारण रास्ते ही से लौट आये और अपनी उसी टूटी कोठरी में विश्राम करना पड़ा। मैंने वाजपेयीजी को शहर जाने के लिए और कोई अच्छा ठहरने का स्थान देखने के लिए कहा। वे तुरन्त चल दिये और एक घण्टे के बाद एक तांगे में बैठे हुए लौटे। उन्होंने मुझ से कहा कि जलियानवाले बाग़ के पास ही एक अच्छी धर्म्मशाला है, अच्छा हो कि हम वहीं चल कर ठहरें। मैंने वाजपेयीजी की बात मान ली और हम उसी तांगे में बैठ कर दूसरी धर्म्मशाले में पहुंचे। जलियानवाले बाग़ के समीप दो धर्म्मशाले हैं। इन में से एक में हमने विश्राम किया। दोनों की इमारतें तिमंज़िली हवादार हैं और यहां यात्रियों के ठहरने का अच्छा प्रबन्ध है। पहले दिन हम लोग थके होने के कारण कुछ अस्वस्थ थे इसलिए कहीं बाहर न गये। दूसरे दिन तबियत कुछ अच्छी जान पड़ी, स्नान किया और इसके पश्चात् देश के माननीय नेता डाक्टर सत्यपाल से मिलने के लिए चले।

सौभाग्यवश डाक्टर साहब हम को अपने घर ही पर मिल गए। वार्त्ता-लाप करनें पर बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। आप मुझे बड़े सज्जन, धार्मिक तथा मिलनसार जान पड़े।

मैंने डाक्टर साहब से इच्छा प्रकट की कि यदि वे अपने इष्ट मित्रों सहित अपनी फ़ोटो उतराने की आज्ञा दें तो मैं बड़ा कृतज्ञ होऊंगा। आपने पहले कुछ आनाकानी की, परन्तु मेरे कई बार आग्रह करने पर मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली। मैंने आप से अमृतसर शहर के उन स्वदेश भक्तों की एक नामावली के लिए प्रार्थना की जो कि मार्शल-ला के समय कष्टों का शिकार बने थे। आपने बड़े हर्ष से हमको नामावली दी, जिस को पा कर हम विदा हुए। एक तांगे में सवार हो कर सब से पहले हम डाक्टर बशीर के यहां गए, इसके बाद डाक्टर गुरुबख्शराय और कोट्रूमल से मिले। शोक है कि हम केवल इन्हीं तीन सज्जनों से मिल सके जो कि इस समय शहर में थे। बाक़ी नेताओं से भेंट न हो सकी क्योंकि वे शहर के बाहर थे। डाक्टर गुरुबख्शराय तथा डाक्टर बशीर ने हमारे फ़ोटो लेने के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। हमने निश्चय किया कि सब लोग दूसरे दिन प्रातःकाल सात बजे डाक्टर सत्यपाल के यहां उपस्थित हों और वहीं फ़ोटो लिया जाय। इस के अनन्तर हम अपनी धर्म्मशाला में आये और भोजनादि से निवृत्त हुए। अब हमारा विचार हुआ कि 'पञ्जाब के प्रान्ताधिकारी डायर साहब के लीला-क्षेत्र—जलियानवाले बाग़ को चल कर देखें। बाग़ में जाने के लिए एक तङ्ग गली द्वारा प्रवेश करना पड़ता है। गली

को पार करने पर दो सौ गज़ लम्बा और लगभग डेढ़ सौ गज़ चौड़ा एक मैदान देख पड़ता है । मैदान के चारों ओर दीवारें खड़ी हैं । इस बाग़ में जो पिछली हत्याकाण्ड की घटना हुई है उसके बाद ही दाहिनी ओर की दीवार का कुछ ऊपरी भाग तोड़ डाला गया है । सुना जाता है कि कुछ समय पहिले यह स्थान बिल्कुल अपरिष्कार था और यहां कोई सभा आदि कभी न होती थी । जब अमृतसर में रौलट एक्ट के प्रतिवाद में राजनैतिक आन्दोलन का प्रवाह अधिक बढ़ा, यह स्थान प्रति दिन जनता की भीड़ से भरा रहने लगा । सार्वजनिक सभाओं के अवसर पर इस खँडहर में इतनी अधिक भीड़ रहती थी कि साँस लेना कठिन हो जाता था ।

तारीख़ १३ अप्रैल सन् १९१९ का दिन भारत के इतिहास में सदा अमर रहेगा । इस दिन जब जनता रौलट बिल के प्रतिवाद स्वरूप में एकत्रित हो कर सभा कर रही थी, जनरल डायर ने निःशस्त्र भारतीयों के समूह को अपने सैनिकों द्वारा गोली की बौछारों से छेद डाला था । पता लगता है कि इस अवसर पर हमारे शासकों ने लगभग एक हज़ार छः सौ पचास गोलियां व्यवहार की थीं । यह दिन केवल इस हत्याकाण्ड ही के लिए प्रसिद्ध नहीं है किन्तु हिन्दू-मुसल्मानों की एकता का भी स्मारक है । इस दिन दोनों जाति

के मिश्रित रुधिर से इस वीरान खँडहर की भूमि तर हुई थी और तब से यह बाग़ एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटना-स्थल बन गया । हम इस भूमि पर घूम घूम कर यहां की बीती हुई घटनाओं का स्मरण कर रहे थे, और यह सोच कर पश्चात्ताप करते थे कि परमात्मा ने ऐसा अवसर क्यों दिया जिस से जनता ने सरकार के पास किये हुए क़ानून के प्रतिवाद में सभा की और शासकों को ऐसी सभा को देश में अशान्ति और उपद्रव उत्पादक समझ कर उस पर अपनी शक्ति का प्रयोग करना पड़ा । कई स्थानों पर दीवारों में हम को गोलियों के छिद्र मिले । इनमें से कई बहुत गहरे थे अर्थात् पांच से लगा कर सात इंच तक के थे । पाठक ! स्वयं अनुभव कर लें कि यहां कैसी भीषण घटना हुई होगी। बाग़ में एक प्राचीन कुआँ तथा कई बरगद, पीपल आदि के पेड़ हैं । मध्य में एक छोटा सा पुराना समाधि-मन्दिर है । आज कल बाग़ की रक्षा के लिए एक मनुष्य नियुक्त है जो इसे मल-मूत्रादि से बचाया करता है । घटना के बाद से नित्य प्रति सैकड़ों सज्जन देश-विदेशों से इस ऐतिहासिक भूमि के दर्शन करने आते हैं । कई घण्टों के बाद हम उस बाग़ के बाहर आये और सीधे अपने ठहरे हुए स्थान को चले गये ।

दूसरे दिन प्रातःकाल मैंने बाजपेयी जी को जगाया, और उन्

से डाक्टर सत्यपालजी के यहां चलने को तैय्यार होने के लिए कहा । वे झटपट अपनी भंगबूटी से फ़ारिग़ हो मेरे साथ चल दिये । हम डाक्टर साहब के औषधालय में पहुंचे ही होंगे कि स्वयं डाक्टर साहेब आते हुए दिखाई पड़े । थोड़ी देर बाद डाक्टर बशीर, डाक्टर गुरुबख्शराय तथा एक फ़ोटो ग्राफ़र साहब भी आ पहुंचे । हम सब लोग टेम्परेन्स हाल के सामने वाले बगीचे में गये और वहीं फ़ोटो लिया गया । कुछ देर वार्त्तालाप करने के बाद हमने नेतागणों से विदा मांगी और अपने स्थान पर आये । कुछ थोड़ा खा पीकर हमने सिक्खों का गुरुद्वारा देखने का विचार किया । हम पैदल ही चले और कुछ समय के बाद गुरुद्वारे के समीप आ पहुंचे । यह स्थान स्वर्ण-मन्दिर तथा दरबार साहब के नाम से भी प्रसिद्ध है । शहर के मध्य में एक बड़ा सरोवर है, जिसके बीचों बीच यह स्वर्ण मन्दिर बना है । स्वर्ण-मन्दिर के तालाब को अमृत सरोवर के नाम से भी पुकारते हैं । तालाब के चारों ओर रेलिंग लगी हुई हैं और घाट सफ़ेद संगमर्मर के पत्थरों का बना है । तालाब बहुत गहरा है और सदा स्वच्छ जल से परिपूर्ण रहता है । पश्चिम की तरफ़ एक मेहराबदार फाटक है । फाटक से स्वर्ण-मन्दिर जाने के लिए तालाब के बीच सफ़ेद मार्बल पत्थर का पुल बना हुआ है । फाटक से मन्दिर तक पुल के दोनों तरफ़ लाल

शीशों से जड़ी हुई गुम्बजदार लालटेनें लगी हुई हैं। मन्दिर की इमारत दो-मंजिली है जिस में सिक्खों का धर्म्मग्रन्थ रखा रहता है। सिक्ख समुदाय इसी धर्म्मग्रन्थ का पूजन करते हैं, और हलुवे का "कड़ा प्रसाद" सब को बांटा जाता है। मन्दिर के भीतरी भागों में कई प्रकार के रंग विरंग शीशों से कुन्दन तथा बहु मूल्य पत्थर जड़े गए हैं। यहां सदा धार्म्मिक गायन हुआ करता है। मन्दिर के ऊपर कई छतरियां हैं जिनमें से कुछ पर सोने का पानी चढ़ाया गया है और सोने की पत्तियां मढ़ी गई हैं। इसमें सन्देह नहीं कि मन्दिर भारतवर्ष में एक देखने योग्य वस्तु है। नगर में रामबाग, तेजसिंह का बनवाया हुआ शिवमन्दिर, मोहम्मद जान की मसजिद तथा कई छोटे तालाब इत्यादि दर्शनीय हैं। यह शहर हाथीदांत का काम, दस्तकारी, तथा गोटे और शाल दुशाले के काम के लिए प्रसिद्ध है।

६—लाहौर।



अमृतसर में दर्शनीय चीज़ों के देखने के बाद हमने लाहौर जाने का विचार किया, अस्तु हम अमृतसर से लाहौर के लिए दोपहर की गाड़ी से रवाना हुए। रास्ते में

कई स्टेशनों को पार कर के हम रात्रि के साढ़े आठ बजे लाहौर पहुंचे, स्टेशन बिजली के स्वच्छ प्रकाश से प्रकाशित था। एक कुली द्वारा हम अपना सामान ले कर बाबू वंशीधर के धर्म्मशाले में गये। यद्यपि उपरोक्त धर्म्मशाला का प्रबन्ध बहुत अच्छा था परन्तु भीड़ इतनी अधिक थी, कि हमको यहां ठहरने की जगह न मिल सकी। विवश हो कर हमने एक तांगा लिया, और शहर में किसी दूसरे धर्म्मशाले की खोज में निकले। कुछ देर बाद तांगेवाले ने हम को ले जा कर एक ऐसे अन्धकारमय स्थान में खड़ा किया जहां बिल्कुल सन्नाटा था। हमने तांगे से उतर कर अपने को एक मकान के सामने पाया। मकान में प्रकाश का अभाव था और भीतर से बड़ी दुर्गन्ध निकल रही थी। इस स्थान में ठहरने पर हम राजी न हुए और शहर की दूसरी धर्म्मशाला में जो अनारकली के पास है वहां जा ठहरे।

यहां हमने अजायब-घर देखा, जहां कई प्रकार के पशु देखे। अजायब-घर में दस्तकारी के काम, प्राचीन समय की शिला मूर्तियां, तथा बहुत से प्राचीन चित्रों का संग्रह है। यहां गुरु गोविन्दसिंह के समय की दो पीतल की तोपें भी रक्खी हैं। हमने शाहजहां बादशाह का बनवाया हुआ शाला-मार बाग देखा जो शहर से कई मील की दूरी पर है। बाग तीन भागों में विभक्त है, जिन में से बीच का भाग

देखने योग्य है । बीच के भाग में सफ़ेद मार्बल की बारह-दरी तथा बादशाही समय की कई इमारतें हैं । यहां हमने बहुत से अन्य दर्शनीय स्थान भी देखे। अब हमारा विचार रावलपिण्डी जाने का हुआ, इसलिए हम चलने की तैय्यारी करने लगे। स्टेशन पर पहुंचते ही गाड़ी मिल गई जिस में बैठ कर हम रावलपिण्डी की तरफ़ चल दिये ।

७—रावलपिण्डी ।

दूसरे दिन कई पहाड़ी गुफ़ाओं में होती हुई हमारी ट्रेन ठीक दस बजे दिन को रावलपिण्डी स्टेशन पर पहुंची । स्टेशन पर पहुंचते ही हमको गोरे सैनिकों के दल के दल इधर उधर टहलते हुए दिखलाई पड़े । हमने ट्रेन से उतर कर प्लेटफ़ार्म पार किया और स्टेशन के बाहर आये । यहां इक्का, मोटर, तांगा आदि सब प्रकार की सवारी सदा तैय्यार रहती हैं । स्टेशन के पास सिक्खों का बनवाया हुआ एक धर्म्मपुरा नामक धर्म्मशाला है जिसमें आकर हम लोग ठहरे । हमारी धर्म्मशाला शहर की आबादी से लगभग डेढ़ मील की दूरी पर थी। धर्म्मशाला में घुसते ही मालूम हुआ कि शहर में प्लेग फैला हुआ है। इसलिए हमने शहर में जाने

को विचार छोड़ कर यहीं ठहरना उचित समझा। समय गर्मी का होने के कारण बड़ी प्रचण्ड गर्मी पड़ रही थी। यहां पहुंचने के पहले हमारा अनुमान था, कि रावलपिण्डी में सीमाप्रान्त निकट होने के कारण कठिन जाड़ा पड़ता होगा। लेकिन यहां आने पर हमारी वह भावना असत्य निकली।

जिस धर्म्मशाले में हम ठहरे हुए थे वहां स्वच्छता का बिल्कुल अभाव था। रसोई का स्थान मैला कुचैला होने के कारण हमारे सनातन धार्म्मिक विचारों में बड़ी चोट पहुंची। बाजपेयी जी भांग के भक्त होने के कारण नशे में गड़गप्प रहते थे, परन्तु मुझे स्वच्छता का अधिक ध्यान रहता था। रावलपिण्डी में अधिकतर काबुली, और पेशावरी मनुष्य देखने में आते हैं। शहर में आर्य्यसमाज की तरफ़ से एक उच्च विद्यालय है। जिसकी इमारात बहुत सुन्दर है; और जहां लड़कों को शिक्षा देने की प्रणाली प्रशंसा के योग्य है। शहर के बीचों-बीच आर्य्यसमाज का एक हाई स्कूल है जिसके सामने एक धर्म्मशाला है। यहां यात्रियों के ठहरने का बहुत अच्छा प्रबन्ध है। शहर में सेब, नास्पाती, अंगूर तथा मेवा इत्यादि की बड़ी भारी मण्डी है। अधिकतर फल श्रीनगर से आते हैं जो नित्य प्रति प्रातःकाल सन्दूकों में भरे हुऐ नीलाम होते हैं। यहां से फल और मेवे देश विदेशों को भेजे जाते हैं। रावलपिण्डी में सरकार ने एक बड़ी छावनी बनाई है क्योंकि यह

स्थान देश के सीमाप्रान्त के बहुत निकट है। शहर में प्लेग की बीमारी होने के कारण हमने यहां से जल्दी ही बिदा होना उचित समझा; इसलिए श्रीनगर जाने की चिन्ता में संलग्न हुए। रावलपिण्डी से श्रीनगर एक सौ अठानवे मील की दूरी पर है। यहां श्रीनगर के लिए मोटर, लोरी, तांगा टट्टू आदि सब सवारियां मिलती हैं। यात्री अपनी हैसियत और यात्रा के उद्देश्य के अनुसार कोई सवारी ठीक कर लेते हैं। यहां से एक पूरी मोटर का किराया श्रीनगर तक डेढ़ सौ या दो सौ रुपये तक लगता है। लोरी का प्रति मनुष्य का किराया पचीस रुपये से पैंतीस रुपये तक है। एक पूरे तांगे का किराया पैंतालीस रुपये से पचास रुपये तक है। अच्छी मोटर एक दिन में श्रीनगर पहुंचती है, लोरी दो दिन में, और तांगा पांच या छः दिन में। रावलपिण्डी से नित्यप्रति बहुत से सज्जन श्रीनगर जाया करते हैं। जिस धर्म्मशाला में हम ठहरे हुए थे वहां पन्द्रह सोलह सज्जन ठहरे हुए थे। हमारी काश्मीर की यात्रा का उद्देश्य प्राकृतिक दृश्य तथा ऐतिहासिक घटना-स्थल देखने का था इसलिए हमने लोरी में यात्रा करना निश्चय किया।

लोरी आफिस में जाने के पहले हमने अपना सामान तैय्यार किया। मैंने बाजपेयीजी को अपने साथ लिया और लोरी आफिस में जाकर दो टिकिट के रुपये जमा कर दिये।

मैनेजर ने हम से कहा कि गाड़ी की बाक़ी सीटें पूरी हो जाने पर वह हमारे ठहरे हुए धर्म्मशाले के पास से चार बजे निकलेगी। हम लोगों को निर्दिष्ट समय पर तैय्यार रहना चाहिए और वहीं से सवार हो जाना चाहिए। हमारी लोरी में चौदह या पन्द्रह मनुष्यों के बैठने की जगह थी। हम टिकट लेकर अपनी धर्म्मशाला में आये और दिन के ढाई बजे तक आपस में वार्त्तालप करते रहे। हमारी धर्म्मशाला में श्रीनगर जाने के लिए भोर रियासत के एक उच्च पदाधिकारी भी ठहरे हुए थे। इन से और मुझ से मेल मिलाप हो गया और साथ ही श्रीनगर जाने की सलाह ठहरी। मैंने वाजपेयी जी से कहा कि अब कुछ जलपान कर लिया जाय और रास्ते के लिए कुछ फल आदि ले लिये जांय। हम कुछ जलपान आदि कर के बाज़ार गये और कुछ फल व मिठाई ख़रीदी। लोरी आने को अब भी एक घण्टा था, इसलिए हम टाउन हाल की प्रसिद्ध इमारत देखने चले गये। इस को देख कर हम बंगालियों के बनवाये हुए कालीमन्दिर में आये, जो हमारी ठहरी हुई धर्म्मशाला के पास ही था। मन्दिर के फाटक पर एक बङ्गाली युवक से मेरी भेंट हुई जिन्हें ले कर मैं मन्दिर में चारों तरफ़ घूमा। ये बङ्गाली महाशय काली के उपासक तथा बड़े धार्म्मिक थे। मैंने आप से पूछा कि रावलपिण्डी में किन महीनों में अधिक ठंड पड़ती है क्योंकि जिस समय

मैं यहां नहीं पहुंचा था मेरी धारणा थी कि पहाड़ समीप होने के कारण ठंढ पड़ती होगी परन्तु मेरा अनुमान असत्य निकला। बङ्गाली युवक ने कहा, "यहां के धोखे न रहियेगा। यहां से चालीस मील दूर जाने पर मरी नामक पहाड़ पर श्रीनगर से भी अधिक जाड़े का अनुभव प्राप्त होगा। आप जाड़े का पूरा इन्तज़ाम कर के श्रीनगर की यात्रा का विचार कीजिये।" हम इनको धन्यवाद देते हुए अपनी धर्म्मशाला में आये। हमारे आने के थोड़ी देर बाद ही लोरी भी आ पहुंची। मैंने मौर के कर्म्मचारी जी से श्रीनगर चलने को कहा परन्तु उन्हों ने थकावट के कारण चलने की अशक्ति प्रगट करते हुए कहा, "आप चलिये मेरा शरीर थकावट के कारण कुछ अस्वस्थ हो गया है, इसलिए मैं आज विश्राम करके कल आऊंगा।" हमारी सीटें गाड़ी में ठीक हो चुकी थीं, इसलिए हमको उसी दिन विवश होकर चलना पड़ा। लोरी में जगह बहुत तंग थी। अस्तु, हम ज्यों त्यों बैठ गए और तारीख बीस को साढ़े चार बजे श्रीनगर की ओर रवाना हुए।



८—उत्तर की ओर।



लोरी का ड्राइवर मन्द गति से वंशीध्वनि करते हुए अपनी गाड़ी क्रमशः आगे बढ़ाने लगा। देखते ही देखते हमारी गाड़ी एक विशाल हरे भरे मैदान के बीच से निकलने लगी। मैदान पाकर ड्राइवर ने लोरी की गति को और भी तेज कर दिया। अब समय सूर्य्य भगवान् के अस्ताचल जाने का हो आया था, सामने की ओर हमको कुछ नीले रंग के बादल दिखाई देने लगे। देखते ही देखते बादल पहाड़ों में विलीन हो गए। ज्यों ज्यों हमारी मोटर आगे बढ़ती थी त्यों त्यों पहाड़ हमारे अधिक समीप आते जाते थे। लगातार दृष्टि लगाए रहने से ज्ञात होता था कि मानों हमारे दोनों तरफ़ पहाड़ दौड़े चले जा रहे हैं। एक स्थान पर हमारी लोरी खड़ी हुई। उतरने पर मालूम हुआ कि यहां प्रति मनुष्य को छः आने टाल टैक्स अर्थात् महसूल के देना पड़ते हैं। हमने भी अपना महसूल चुकाया और मोटर पर सवार हो कर आगे बढ़ने लगे। जिस लोरी पर मैं सवार था उसी पर और भी चौदह सज्जन थे। इनमें से एक पञ्जाबी लड़का था, एक भजन मण्डली थी और कुछ दूसरे सज्जन थे। लोरी में एक दूसरा पञ्जाबी युवक

बैठा हुआ ड्राइवरी की शिक्षा पा रहा था। क्रमशः शुक्लपक्ष की रात्रि का अन्धकार फीका जान पड़ने लगा। इधर कलाधर की निर्मल चन्द्रिका के विकाश से पहाड़ों की मनोहरता और भी बढ़ने लगी। कई छोटी छोटी चट्टियों को पार करती हुई रात्रि के लगभग दस बजे हमारी लोरी छतर नामक चट्टी पर पहुंची। पहाड़ी रास्तों में रात्रि के दस बजे उपरान्त मोटर लोरी, तांगा, टट्टू आदि चलने की आज्ञा नहीं है, केवल बैलगाड़ियां चल सकती हैं, अतएव हमको लोरी से उतर कर यहां रात्रि व्यतीत करनी पड़ी। समय खासे जाड़े का था, और कुछ मट्टी के मकानों में चिराग टिमटिमा रहे थे। हम को रात्रि व्यतीत करने के लिए एक मिट्टी की फूटी कोठरी में शरण लेनी पड़ी। संयोगवश एक पलंग मिल गया जिससे कुछ विशेष कष्ट न हुआ। जिस कोठरी में मैं और बाजपेयी जी थे, उसका किराया रात्रि भर के लिए चार आने देना पड़ा। हमारी लोरी के बाक़ी साथी भी जिनको जहां जगह मिली ठहर गए थे। दो तीन सज्जन तो लोरी में ही सो गये थे। इनमें से एक हमारा ड्राइवर गोपालसिंह भी था। हम लोगों को सूचना मिल चुकी थी कि प्रातःकाल चार बजे मोटर रवाना होगी और प्रत्येक यात्री को उसी निश्चित समय पर उपस्थित होना चाहिये, जिससे यहां से बिदा होने में बिलम्ब न हो।

हमने अपनी कुटी का दरवाजा खोल दिया और कुछ

देर निशाकर को निर्निमेष देखते रहे। गगनमंडल की शोभा चन्द्रिका धौत निर्मल प्रकाश में बढ़ रही थी। बस्ती के आस-पास चारों ओर जङ्गल था। और कुछ २ ओस गिरने लगी थी। यद्यपि आकाश में बादल न थे, किन्तु पहाड़ों के बीच से किसी किसी समय बिजली की आभा दिखाई पड़ती थी। वायु के झोंकों से चीड़ के सुन्दर वृक्ष झूम रहे थे। चीड़ के वृक्ष नुकीले होते हैं और झाऊ के वृक्षों की तरह देखने में बड़े मनोहर लगते हैं। जब हम पलंग पर पड़े हुए इन दृश्यों को देख रहे थे, हमको प्राकृतिक सौन्दर्य्य का बड़ा आनन्द प्रतीत होता था। कुछ समय बाद बाजपेयी जी तो निद्रादेवी की गोद में विश्राम करते हुए देख पड़े, परन्तु मुझे आराधना में कुछ समय लगा। मेरे चित्त में सहसा यह विचार उत्पन्न हुआ, कि कदाचित् कोई जङ्गली जानवर जङ्गल से न आ जाय और खुले हुए दरवाजे में हम लोगों को अकेले पाकर चट कर जाय। मैं झट पलंग से उठा और दरवाजे को बन्द कर के सो गया। जब मेरी आंख खुली, दरवाजा खोल कर देखा तो विदित हुआ कि प्रभात हो चला है। मैंने तुरन्त बाजपेयी जी को उठाया और शौचादिक कर्म्म से निवृत्त हुए। मैदान में इतनी ओस गिर रही थी कि बाहर की कोई वस्तु दृष्टिगोचर न होती थी। यह दशा देख कर मुझे योरप की याद हो आई और ऐसा अनुभव

होने लगा कि मानों हम इंग्लिस्तान की भूमि पर खड़े हैं। पानी में हाथ पैर धोने से बरफ़ का अनुभव होता था। हम तैय्यार हो कर अपनी लोरी के पास पहुंचे। देखा, कि सब सवारियां बैठी हैं, केवल हमारी ही प्रतीक्षा हो रही है। हमारे लोरी में सवार होते ही वह चल दी और कुछ दूर चल कर अपने पूर्ण वेग से दौड़ने लगी।



६—कोह मरी अथवा मरी।



जाड़ा अधिक पड़ रहा था। पाठक यह न समझें कि मैं पौष के महीने की दशा कह रहा हूं। नहीं, मैं यहाँ के भादों महीने का वर्णन कर रहा हूं। हमको चारों तरफ़ बड़े बड़े विशाल पर्व्वत देख पड़ने लगे। यथार्थ में इतने बड़े बड़े प्रर्व्वत आज तक मैं ने अपने जीवन में कहीं न देखे थे। कुछ दूर चल कर हमको सामने एक बहुत ऊँची पहाड़ी चढ़ाई दिखाई दी। जिस सड़क पर हमारी लोरी दौड़ रही थी, उसकी चौड़ाई बहुत कम थी। हमारे एक तरफ़ गहरे महा भयानक पहाड़ी खन्दक़ थे और दूसरी तरफ़ ऊंचे मस्तक उठाए विशाल पर्व्वत। कुछ समय बाद हमारी खड़ी

चढ़ाई आरम्भ हुई। पूरी शक्ति भर चलाने पर भी लोरी केवल बैलगाड़ी ही की चाल चल रही थी। कभी कभी पहाड़ के ऊपर समतल भूमि पाकर बड़े वेग से दौड़ने लगती और कभी फिर वही अपनी सुस्त चाल। थोड़े समय में हमारी लोरी पहाड़ की चोटी तक पहुंच गई। पाठकगण! हमारी समस्या का अन्त यहीं नहीं हुआ। इस पर्व्वत के ऊपर पहुंचने पर एक दूसरा पर्व्वत और भी बड़ा दिखाई दिया। अब ड्रायवर गोपालसिंह ने हम सब लोगों को सावधान होने के लिए कहा, और लोरी को उस विशाल पर्व्वत की परिक्रमा कराते हुए ऊपर चढ़ाने लगा। पहाड़ों के अतिरिक्त जंगल की भी किसी प्रकार से कमी न थी। पर्व्वतों की चोटियों से नीचे दृष्टि डालने पर जङ्गलों का दृश्य बड़ा ही मनोहर जान पड़ता था। जिस समय पहाड़ों के मोड़ पर हमारी मोटर घूमती थी, नीचे की ओर ताकते ही रोंगटे खड़े हो जाते थे। ऐसा मालूम होता था कि अब को बार विशाल खन्दक़ की ओर अवश्य गये। श्रीनगर से रावलपिण्डी जानेवाले कितने ही मोटर, लोरी, तांगे इत्यादि हमारी बगल से निकल जाते थे। इन्हें देख कर यह शङ्का होती थी कि कहीं ऐसा न हो कि पहाड़ का मोड़ घूमते ही उधर से भी कोई दूसरी मोटर आ जाय और हमारी लोरी से टकरा कर हम सबों की काश्मीर यात्रा तो क्या संसार यात्रा ही का अन्त कर दे। जितना ही

अधिक हमारी लोरी आगे बढ़ती थी उतना ही अधिक हम को जाड़ा मालूम होता था। जो रास्ते अधिक भयानक मिलते थे वहां काठ के बोर्डों पर बड़े बड़े अक्षरों में अंग्रेजी अथवा हिन्दी द्वारा "काशन या खबरदार" लिखा रहता था। हमको इसी प्रकार एक के उपरान्त दूसरी और दूसरी के उपरान्त तीसरी कठिन चढ़ाई का सामना करना पड़ा। कुछ समय बाद हम को छोड़ा गली नामक चट्टी मिली। इसको पार करके तारीख इक्कीस अगस्त सन १९२० को प्रातःकाल साढ़े आठ बजे हम मरी नामक प्रसिद्ध चढ़ाई की चट्टी में पहुंचे।

मरी नामक पहाड़ की चट्टी एक पहाड़ की चोटी पर है, जो पृथ्वी से प्रायः आठ हजार फीट ऊँचा है। यहाँ पर हाट, बाजार, कचहरी इत्यादि सब कुछ है, और अंग्रेजी तथा हिन्दुस्तानी पल्टनें भी रहती हैं। यहाँ बहुतेरे अँग्रेज पञ्जाब से आकर गर्मियों में रहते हैं क्योंकि यहां की सी सरदी काश्मीर की राजधानी श्रीनगर में भी नहीं होती। शहर पहाड़ों पर ऊँचा नीचा बसा है। एक मकान ऊपर है तो दूसरा उसके पचास साठ हाथ नीचे। ऊपर से नीचे आने के लिए पहाड़ की परिक्रमा करके आना पड़ता है। इस समय हम को यहाँ इतना अधिक जाड़ा मालूम होता था कि खून जम कर बरफ हुआ जाता था। हमारी लोरी यहाँ लगभग एक घंटा ठहरी। इतने समय में हम सबको कुछ चाय व खाना

ग्रहण कर लेने का अवसर मिल गया। इस स्थान से आस पास दृष्टि डालने पर सफ़ेद बर्फ़ से ढके हुए चोटी वाले दूरस्थित पहाड़ों का दृश्य बड़ा मनोहर जान पड़ता है। चित्त चाहता था कि घण्टों खड़े देखते ही रहें। देखते देखते यह सन्देह होने लगता था कि पतित-पावनी शुभ्र सलिला जान्हवी शिवजी की लम्बी लम्बी जटाओं से निकल कर बह रही हैं।

१०—कोहाला की ओर।

हमारी लोरी अब आगे बढ़ी। रास्ते में अब पहिले की सी चढ़ाई न थी किन्तु उतराई थी, क्योंकि मरी पहाड़ ही से बराबर उतार शुरू हो जाता है। जिस समय मोटर नीचे उतर रही थी उसका वेग इतने ज़ोर का था, कि आस पास के वृक्ष आंख के पलक बन्द करते ही अ-दृश्य हो जाते थे। उतराई के समय मोटर में पेट्रोल की भी कम आवश्यकता होती है। चलते चलते मोटर के चक्के इतने गर्म हो गए थे कि उनमें से बन्दूक़ की तरह आवाज़ होने लगती थी। लोरी के चक्के गर्म देखकर हमारा गोपाल सिंह ड्राइवर बीच बीच में झरनों से जल लेकर उनको ठंढा

करता जाता था । अब हमारे एक तरफ़ विशाल पर्व्वत और दूसरी तरफ़ डेढ़ दो सौ गज गहरी चीड़ और देवदार के वृक्षों से परिपूर्ण खाई थी । खन्दक़ में हमको कुछ बहता हुआ जल दिखाई देता था । ज्यों ज्यों हमारी लोरी आगे बढ़ी वह बहता हुआ जल अब हमको नाले की पूर्ण आकृति में दिखाई देने लगा । कुछ देर बाद यह नाला एक तीव्रगामी नदी की दशा में परिणत हो गया और शनैः शनैः नदी का भी सौन्दर्य्य बढ़ने लगा । जिस स्थान पर नदी के वक्षस्थल में छोटे बड़े पत्थरों से जल टकरा रहा था, उस जगह का दृश्य देखने योग्य था । पानी के वेग से बहने की आवाज मेघवर्षा की आवाज से मिलती जुलती थी । जल पत्थरों से टकराने के कारण कहीं कहीं आपस की बातचीत भी न सुनाई देती थी । किसी किसी जगह जल बहुत गहरा था और उसके पास पहाड़ बिल्कुल खड़े जान पड़ते थे । नदी अपने गम्भीर स्वर से निर्जन स्थान में नाद करती हुई बह रही थी । हम अपने को इन मनोहर दृश्यों से मुग्ध करते हुए अपनी लोरी में चले जा रहे थे । थोड़ी देर में बारह बजे का समय हुआ । भगवान भास्कर अपनी सर्वोपरि सी-मा पर आकाश में पहुंच चुके थे । कुछ समय बाद हमको बगवाड़ी नामक एक चट्टी मिली । चट्टी में हम अभी पहुंच नहीं चुके थे, कि अकस्मात मोटर के अगले भाग की तरफ़

इञ्जन में एक बड़े जोर का शब्द हुआ। शब्द होते ही उसी स्थान पर मोटर एक दम खड़ी हो गई। हम लोग मोटर से उतरे और इञ्जन के सामने आये। ड्राइवर गोपाल सिंह ने जब मोटर के इञ्जन को खोला तो मालूम हुआ कि उसका कुछ हिस्सा ख़राब हो गया है। ड्राइवर ने हम लोगों से कहा कि अब हम लोग आराम करें क्योंकि मोटर बिगड़ गई है। मोटर की सब सवारियां बैठे बैठे ऊब उठी थीं, इस लिए मोटर को रुकी जानकर सब प्रसन्न हुए। यद्यपि अब दोपहर का समय था, तिस पर भी हमको कुछ टहलना अच्छा जान पड़ा। हम में से कुछ नीचे बहती हुई नदी का आनन्द अनुभव करने के लिए चल दिये, और कुछ पहाड़ों में इधर उधर घूमने लगे। एक स्थान पर भजनमंडली के दो लड़कों ने गाना शुरू किया, जिस से पहाड़ का एक भाग आनन्द का भवन बन गया। एक तरफ़ चतुर ड्राइवर गोपाल सिंह अपनी मोटरशिक्षा की परीक्षा करने लगा। कोई डेढ़ घण्टे तक बड़ा प्रयत्न करने के बाद जिस तिस प्रकार पीट पाट कर उसने मोटर का इञ्जन ठीक कर लिया। उसने बड़ी ज़ोर से वंशीध्वनि की, जिसको सुनते ही सब लोग इधर उधर से दौड़ पड़े! गोपाल सिंह हम लोगों की प्रतीक्षा कर ही रहा था; हम सब ने उसके परिश्रम की सफलता पर उसे बधाई दी और मोटर पर बैठ गये। मोटर पूर्व्वगति के अनुसार

चलने लगी । हमारी मोटर अब एक विशाल पर्व्वत की कन्दरा में घुसने लगी । कन्दरा में चारों ओर बिल्कुल अंधेरा था, जिसे देख कर ऐसा मालूम होता था कि मानों चन्द्रमा के भय से वर्ष भर की सारी अमावस्याएँ इसी कोह में छिपी हुई हैं । कई गुफाओं को पार करके हम बाँसिया नामक चट्टी पर पहुंचे । यहां से कोहाला नामक चट्टी थोड़ी दूर रह जाती है । आगे बढ़ने पर हमको झेलम नदी का पुल मिला जो रावलपिण्डी से सौ मील के अन्तर पर है । पुल पार करते ही कोहाला नामक चट्टी मिली । काश्मीर प्रदेश की सीमा यहीं से शुरू होती है । सीमा में प्रवेश करते ही मोटर की वस्तुओं के खोजाने का भार ड्राइवर को लेना पड़ता है । यहाँ टाल का किराया देकर हम आगे बढ़े ।

कहीं कहीं पहाड़ों के वक्षस्थल में हरे भरे खेत दिखाई देते थे, और फिर विलीन हो जाते थे । किसी किसी स्थान पर पहाड़ के शिरोभाग से नीचे तक फैले हुए खेत ऐसे जान पड़ते थे कि मानों प्रकृतिदेवी ने पर्व्वतों को आभूषण पहिना दिये हैं । झरनों से जल निकल निकल कर वक्र नालियों द्वारा खेतों में बह रहा था । सूर्य्य भगवान् की किरणें इस बहते हुए जल पर गिर कर खेतों की शोभा को और भी अधिक बढ़ा रही थीं । खेतों की तरफ देखने से कभी कभी तो यही प्रतीत होता था कि मानों हरे मखमली गलीचे पड़े हुए हैं ।

प्रकृति की इस मनमोहिनी शोभा को देख कर हम सबों का चित्त मुग्ध हो गया। प्रसन्नता की तरङ्ग में आकर मेरे मुख से ये शब्द निकल पड़े :—

ऐ, निर्म्मल-सूर्य्य-करोज्वल धरणी !
जनक–जननी–जननी।
नील सिन्धु–जल–धौत–चरण-तल,
अनिल-विकम्पित श्यामल अञ्चल;
अम्बर-चुम्बित भाल हिमाञ्चल,
शुभ्र तुषार किरीटिनी।
प्रथम प्रभात उदय तव गगने,
प्रथम श्याम रव तव तपोवने;
प्रथम प्रचारित तव वन भुवने,
ज्ञान धर्म्म की कौन वाहिनी।
जान्हवी, यमुना विगलित करुना,
चिर कल्याणमयी तुम धन्य;
देश विदेशन देती अन्न,
पुण्य पियूष-स्तन्य-वाहिनी।
ऐ, आर्य्य भुवन मन मोहिनी॥

जब हम चट्टी में गये, हमको आशा हुई कि कदाचित् यहाँ कुछ खाने पीने को मिलेगा। अब हम रियासत की सीमा में घुस आये थे, इसलिए हमको एक स्थान पर

और दूसरे यात्रियों के साथ अपनी शारीरिक परीक्षा देनी पड़ी; और टाल का टैक्स भी चुकाना पड़ा।

११—बारामूला की ओर।

सन्ध्या हो चली थी। सूर्य्य भगवान् भी अस्ताचल जाने की तैय्यारी कर रहे थे। पहाड़ों पर लताओं की शोभा अपूर्व्व थी। ऐसे प्राकृतिक दृश्यों का सही सही वर्णन करना मेरी समझ में मनुष्य की शक्ति से बाहर है। अब क्रमशः रात्रि बढ़ने लगी। हमारी लोरी अपने पूरे वेग से चल रही थी। ऐसे समय में हम लोगों को अकस्मात् एक तूफ़ान का सामना करना पड़ा। तूफ़ान धीरे धीरे बढ़ने लगा, परन्तु हमारी लोरी भी अपने उसी वेग से उसका सामना करती रही। मुझे ऐसा मालूम होने लगा मानों वायु और लोरी में शक्ति की परीक्षा हो रही है। ठीक ऐसे ही समय में इन्द्र भगवान ने भी ऊपर से मूसलाधार जल बरसाना शुरू कर दिया। चन्द्रदेव को हमारी दुर्दशा पर तरस आ गया और वे अपने पूर्ण प्रकाश से हमारी सहायता करने लगे। सर्दी का तो कहना ही क्या है जिन पर

बीती है वे ही जान सकते हैं। तूफ़ान से यात्रियों को बड़ा कष्ट हुआ क्योंकि लोरी की किरमिज़ फटी थी, जिनमें से हो कर पानी की धाराएं हम सब पर गिर रही थीं। परिणाम यह हुआ कि सब के कपड़े लत्ते भीग गए और सब जाड़े में ठिठुरने लगे। कुछ समय बाद पानी का वेग कुछ कम हुआ। और हम लोगों ने अपने भीगे हुए कपड़ों की खबर ली। अभी जाड़ा मिट नहीं चुका था और दाँत किट-किटा रहे थे — इतने ही में पानी ने फिर ज़ोर बाँधा और साथ ही साथ बड़ी प्रचण्ड आंधी भी आई। मैंने अपने कलेजे को कुछ कड़ा कर मोटर के परदे को हटाया, और बाहर निगाह की तो देखा कि पहाड़ों पर घोर बर्षा हो रही है। हवा के कारण चीड़ तथा पहाड़ी अन्यान्य वृक्ष खूब ज़ोर से हिल रहे थे, जिनके एक दूसरे से टकराने से एक प्रकार की बड़े ज़ोर की आवाज़ हो रही थी। झेलम नदी के किनारे किनारे गढ़ी से लेकर उड़ी नामक चट्टी तक ऐसे ऐसे दृश्य हैं कि शायद बायस्कोप वाले भी कभी न दिखा सके होंगे। लोरी अपनी पूर्व्वगति से जा रही थी, इसलिए मैं यह न जान सका कि पिछली चट्टी से अब तक कितना फ़ासला तय हो चुका है। थोड़ी ही देर बाद हमारी लोरी एक बड़े विशाल भवन के सामने आकर खड़ी हो गई। यह भवन एक बाग़ के बीच में था, और भवन में बिजली की

रोशनी जगमगा रही थी। पूंछने पर मालूम हुआ कि हम लोग बारामूला में पहुंच गए।

मोटर से उतर कर मैं एक दूसरी चिन्ता में पड़ा। मुझे फिक्र हुई कि रात्रि में किसके यहां आश्रय लेना पड़ेगा। बड़ी दौड़ धूप के पश्चात् मैं बाजपेयी जी को एक छोटे से होटल में ले गया। हम भीगे भागे तो थे ही, होटल में पहुंच कर एक छोटी सी कोठरी में अधिकार जमाया। यहां आने पर हमको बड़ी शान्ति मिली, जिसके लिए हमने ईश्वर को कोटिश धन्यवाद दिया। हमारे बहुत से साथी इसी होटल की दूसरी कोठरियों में ठहरे हुए थे। हर्ष की बात है कि होटल में यथासम्भव यात्रियों के सुपास का प्रबन्ध किया गया था। प्रत्येक कोठरी में एक टेबिल, एक चेअर और एक पलंग था। जब हमारा ध्यान कपड़ों की ओर गया तो सब कपड़े खोल कर देखे। मालूम हुआ कि ऊपर के कपड़े, भीग गये हैं परन्तु भीतर सब खैरियत है। भीगे हुए कपड़े फैलाने के पश्चात् हमने दूसरे कपड़े बदले। काश्मीर जाने वाले यात्रियों को इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिये, कि वे अपने साथ काफी तादाद में कपड़े ले जावें, नहीं तो बहुत सम्भव है कि हम से भी अधिक कष्ट उन्हें भोगना पड़े। इस समय हम बहुत भूखे थे, इसलिए भोजन के प्रबन्ध करने की सूझी। मैं अपनी कोठरी के बाहर आया तो पूंछने पर मालूम हुआ

कि पाकशाला पास ही है। पाकशाला में काश्मीरी ब्राह्मण निरामिष भोजन और चाय तैय्यार रखते हैं। मैं अपनी आवश्यकता के अनुसार एक ब्राह्मण को सामग्री लाने की आज्ञा दे कर अपनी कोठरी में लौटा। वाजपेयी जी जाड़े के मारे ऐसे सिकुड़े हुए बैठे थे जैसे कि भीगी हुई बिल्ली बरसात में। आपने मेरे कई बार बुलाने पर भी सिर न उठाया। मुझको उन्हें ऐसी दशा में देख कर बड़ा तरस आया और मैंने वहां कुछ पड़े हुए रद्दी कागजों को बटोर कर आग जलाई और उनके प्राणों की रक्षा की। थोड़ी देर में काश्मीरी ब्राह्मण भोजन ले कर हमारे कमरे में आ पहुंचा। भोजन को देखते ही वाजपेयी जी आग छोड़ कर थाली की तरफ़ इस प्रकार टूटे जैसे जन्म के मरभुके रोटी पर। भोजन कर लेने के पश्चात् हमारे शरीर में कुछ शक्ति आई। हमने काश्मीरी ब्राह्मण देवता से दो प्याले चाय लाने के लिए कहा, जिसको पीकर हम अपने २ बिछौनों पर विश्राम करने के लिए गये। जिस होटल में हम ठहरे हुए थे, उसमें चाय और ठहरने के लिए प्रति-मनुष्य से आठ आने लिये जाते थे। हम लोग दिन भर के हैरान तो थे ही, बिछौनों पर जाते ही नींद गहरी आगई। जब आँख खुली तो देखा कि सवेरा हो गया है। मैं उठा और मैंने वाजपेई जी को उनकी कुम्भकर्णी नींद से जगाया। आप करवटें बदलते हुए और आँखें मिल-

मिलाते हुए उठे । शौच इत्यादि से निवृत्त होकर हम बस्ती में गये । रात्रि में वर्षा होजाने के कारण बारामूला की प्रात:कालीन शोभा अत्यन्त मनोहर थी । यहां की मनुष्य-संख्या लगभग बारह हजार है । और निवासी अधिकतर पंजाबी हैं । दुकानें भी यथेष्ट हैं जहां पर यात्रियों को दूध और पूड़ी इत्यादि मिल सकती है ।

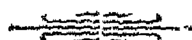
१२—श्रीनगर की ओर ।

बारहमूला से श्रीनगर जाने के लिए लौरी में सं-ढाई घन्टा समय लगता है । रास्ते में पाटन तथा और भी दो एक छोटी चट्टियां मिलती हैं । चलते चलते जब श्रीनगर दस या बारह मील की दूरी पर रह गया, पहाड़ हम लोगों से कुछ दूरी पर हटने लगे । अब हम को धान के खेत दिखाई दिये और बीच बीच में कमल के फूलों से भरे हुए तालाब भी मिले । हमको ऐसे २ तालाब और खेत मिले जिनकी अलौकिक शोभा को वर्णन करना कठिन है । हमको यहां एक अद्भुत प्रकार का वृक्ष देखने में आया, जो चूने से पुता हुआ जान पड़ता है और

जिसे सफ़ेदा वृक्ष कहते हैं। इन वृक्षों की ऊँचाई पचीस या तीस हाथ तक होती है परन्तु इनमें शाखें नहीं होती। सफ़ेदा वृक्ष सड़क के दोनों तरफ़ एक एक हाथ के अन्तर पर लगे हुए हैं। इनकी मोटाई अधिक नहीं होती और पत्तियां सब्ज़ रंग की होती हैं। इन वृक्षों को देखने से ऐसा प्रतीत होने लगा, मानों लताओं की दीवार खड़ी है। वृक्षों के बीच में नाना प्रकार के रंग बिरंगे पक्षी मीठी मीठी बोली बोलते हुए दिखलाई पड़े। कुछ समय बाद हरे और श्याम रंग के वृक्षों के बीच से हमारी लोरी दौड़ने लगी। चित्त यही चाहता था कि इन्हीं वृक्षों की शोभा को सदैव देखा करूँ। प्राकृतिक सौन्दर्य्य को देखकर मुझ से परमात्मा को उसकी कारीगरी पर धन्यवाद दिये बिना न रहा गया। पाठक स्मरण रखें कि हिमालय की शोभा इन्हीं दृश्यों से भरी पड़ी है। यही कारण है कि ऐसे स्थल को शास्त्रों में तपोभूमि कहा गया है। और यहीं हमारे ऋषि मुनि बैठ कर सारे संसार की कल्यान-कामना किया करते थे। उनके चरणों की पवित्र रज इसी पृथ्वी के कणों में मिली हुई है।

जब हम ऐसे विचारों में मुग्ध थे हमारी लोरी श्रीनगर के निकट पहुंची। हमको सामने कुछ मकान दिखाई पड़े। धीरे २ हमारी लोरी पञ्जाबियों के एक धर्म्मशाले के सामने

जाकर ठहर गई । धर्म्मशाला श्रीनगर के सदर-पुल अमीरा कदल के पास ही है । मोटर से उतर कर मैंने परमपिता परमात्मा को धन्यवाद दिया । जिसकी कृपा से तारीख बाईस अगस्त सन् १९२० के दिन के दस बजे हम कुशलपूर्व्वक श्रीनगर पहुंचे ।



१३—श्रीनगर ।

धर्म्मशाले के सिक्ख मैनेजर ने एक तीसरे दरजे में हमको ठहरने के लिए एक कोठरी दी । मोटर में आये हुए हमारे बाक़ी साथी धर्म्मशाला में कुछ देर विश्राम करके अपने अपने निर्दिष्ट स्थानों को चले गये । मैंने बाजपेई जी से परसों की रात्रि के भीगे हुए कपड़ों को फैलाने के लिए कहा । कपड़ों को सुखाने के बाद हम स्नान करने के लिए निकले । नदी हमारे धर्म्मशाले से साठ या सत्तर हाथ की दूरी से अधिक न थी । इस झेलम नदी को यहां वितस्ता भी कहते हैं । किनारे पर पहुंचने से मालूम हुआ कि घाट पक्का है परंतु इतना मैला है कि स्नान करने की इच्छा जाती रही । मैं बाजपेयी जी सहित धर्म्म-

शाले को लौट आया और पाइप में स्नान किया। अब हमको भोजनों की फ़िक्र पड़ी। परन्तु करते क्या। रास्ते के थके तो थे ही, ज्यों त्यों कुछ खा पीकर भूख मिटा ली। इसके पश्चात् हमने कुछ यहां की विशेष बातों का अनुसन्धान करना आरम्भ किया। सायङ्काल के समय और रियासत के कर्म्मचारी जी भी मोटर द्वारा रावलपिण्डी से आ गये। उनके साथ बनारस के एक वृद्ध पण्डित जी भी थे। मैंने कर्म्मचारी जी को देखकर प्रणाम किया और उनसे वहीं ठहरने के लिए आग्रह किया। कर्म्मचारी जी मेरी सलाह पर बड़े प्रसन्न हुए और असबाब सहित मेरी कोठरी में आगये। जब पण्डित जी और कर्म्मचारी जी सायङ्काल की क्रियाओं से निवृत्त हो चुके मैंने उनसे बातचीत शुरू की। थोड़े समय के बाद कर्म्मचारी जी महाराज साहब काश्मीर से मिलने के लिए चले गये। हमारे पास अब बनारस से आये हुए पण्डित जी अकेले रह गये। मैंने उनसे उनका पूरा नाम-ग्राम पूछा और वार्त्तालाप शुरू कर दिया। मालूम हुआ कि आप का नाम बल्देव प्रसाद शास्त्री है और शिवपुर—बनारस कन्टूनमेन्ट के रहने वाले हैं। आप से बातें करने में मुझे बड़ी प्रसन्नता प्राप्त हुई, क्योंकि आप की प्रत्येक बात सदुपदेशों से भरी रहती थी। आप वृद्ध होने पर भी हम लोगों से कहीं अधिक परि-

श्रमी और उत्साही जान पड़ते थे। आप भी काश्मीर की सैर करने के लिए आये हुए थे। आप ने मुझ से कहा कि उन के एक पड़ोसी मित्र पाँडे जी काश्मीर स्टेट में काम करते हैं, इसलिए वे सुबह ही उठ कर उनका पता लगावेंगे और वहीं ठहरेंगे। आप ने हम से भी वहीं ठहरने की बात कही और बतलाया कि इनके साथ बड़ा आराम रहेगा। पण्डित जी की इस आशापूर्ण वाणी से हमको बड़ी ही सुविधा मिली, परन्तु मैंने उनको कष्ट देना उचित न समझा।

जब हम बातचीत कर रहे थे, दो मनुष्य मिठाई की टोकरियाँ लिए हुए हमारे कमरे में आकर पूछने लगे, "भोर से आये हुए कर्मचारी जी क्या इसी कमरे में ठहरे हुए हैं?" मैंने उत्तर दिया, "हाँ।" थोड़ी देर में पलंग इत्यादि सब सामान आ गया और हमारा कमरा सज गया। कर्मचारी जी आये और हम से कहने लगे, कि कल सुबह हम महाराज साहब के यहां चले जांयगे और वहीं से अपनी रियासत के युवराज जो कि तीन चार दिन में आने वाले थे, उनके ठहरने का प्रबन्ध करेंगे। आप ने मिठाई की टोकरियां खोल कर हम सब को राजप्रसाद दिया। स्वाद का तो कहना ही क्या था। बड़ा सराहनीय था। दूसरे दिन प्रातःकाल कर्म्मचारी जी हम लोगों को छोड़ कर चले गये। मैं नित्यकर्म्मों से अवकाश पाकर अपना भोजन बनाने लगा। बनारस के पण्डित जी






अपने मित्र पांडे जी की खोज में निकले जहां से आप लग-भग दोपहर के डेढ़ बजे लौटे। । आप का खानपान पांडे जी के यहां हो चुका था। आप कहने लगे, "मैंने अपने मित्र पांडे जी का पता लगा लिया है, और उनसे आप लोगों के ठहरने का प्रबन्ध करने के लिए भी कह दिया है।" पण्डित जी हम सब को लेकर सन्ध्या के समय पांडे जी से मिलने के लिए चले। आपका बंगला झेलम के समीप लाल कोठी के पास एक ऊंचे स्थान पर है। बंगले पर पहुंच कर पांडे जी से भेंट हुई। आप दफ्तर से आकर बैठे ही होंगे, कि हम लोग पहुंचे। आपका पूरा नाम श्रीयुत पण्डित रमेशदत्त पाण्डेय है और आप जम्मू और काश्मीर के सब स्कूलों के प्रधान निरीक्षक अर्थात् सेक्रेटरी आफ़ एज्युकेशन हैं। सेक्रेटरी साहब के दर्शनों से हमको बड़ा आनन्द मिला। आप विद्वान् और बड़े उदार प्रकृति के पुरुष हैं। आप की कृपा से हमको हमारी यात्रा में बड़ी सुविधाएं मिलीं, जिनके लिए हम आपको कभी नहीं भूल सकते। आप बङ्गभाषा के अच्छे ज्ञाता हैं, तथा आप की दैनिक कार्य्यप्रणाली प्रशंसनीय है। आप ने बड़े प्रेम से हम लोगों को वहीं ठहरने के लिए कहा, और कहा कि वहां हमको किसी प्रकार का कष्ट न होने पायेगा। हमें भी किसी प्रकार की आपत्ति न थी, हमने उनकी प्रार्थना बड़े धन्यवाद के साथ स्वीकार कर ली। आपने झेलम की

और आफ़िस वाला कमरा खाली करवा दिया, और उसमें पलंग डलवा दिये। यद्यपि कोठरी अब हमारे आधीन हो गई, परन्तु ठहरते कैसे, हमारा सामान धर्म्मशाले में था। अस्तु, तीन चार दिन में लौटने की प्रतिज्ञा करके हम अपनी धर्म्मशाला में आ गये।

१४—चश्मेशाही।

तारीख चौबीस अगस्त को हमने चश्मेशाही जाने का विचार किया। श्रीनगर से चश्मेशाही जाने के लिए दो मार्ग हैं; एक स्थल में, दूसरा जल में। हमारा विचार जल-मार्ग द्वारा जाने का हुआ। क्योंकि इस प्रदेश में जो शोभा देखने योग्य है वह जल ही की है। श्रीनगर से चश्मेशाही पांच मील है। चश्मेशाही जाने के लिए हमने चौदह आने में एक शिकारा ठीक किया, जो कि चार या पांच मनुष्यों के बैठने योग्य एक सुन्दर छोटी सी नौका होती है। पण्डित जी, वाजपेयी जी और मैं झेलम नदी में शिकारे में बैठ कर चश्मेशाही की तरफ़ बढ़े। कुछ समय बाद हमने दाहिनी तरफ़ एक नहर में प्रवेश किया। क्रमशः शिकारा

काश्मीर की प्रसिद्ध छोटी झील तथा ऊलर झील में जिसे यहां छोटा डल और बड़ा डल के नाम से पुकारते हैं, पहुंचा। यह झील बड़ी लम्बी चौड़ी है। झील में हमने फूल अधिकता से देखे। हमारे शिकारे के चलते समय फूल हमारे बिलकुल समीप थे। कई घण्टों के बाद झील को पार करके हमने भूमि पर पैर रक्खा। मल्लाह को साथ लिया और एक पहाड़ की चढ़ाई शुरू की। जङ्गली दृश्यों के मध्य में एक दृश्य हमारे साथी वाजपेयी जी का भी देखने योग्य था। आप नशे के झोंक में लम्बी लम्बी टांगें फैलाते हुए फुरती से चढ़ रहे थे, परन्तु मैं रास्ते में विश्राम भी लेता जाता था। थोड़ा चलने पर हमको सीधे क़तारबन्द बादामों के पेड़ मिले। ये वृक्ष अधिक बड़े नहीं होते। इनमें बादाम इतने अधिक लदे हुए थे कि वृक्ष पृथ्वी की तरफ़ टूटे पड़ते थे। छोटे छोटे लड़के पके हुए फलों को तोड़ कर ढेरियां लगा रहे थे। ज्योंही हमने सड़क की मोड़ घूमी, हमको लकड़ी का एक दोमंजिला बड़ा मकान दिखाई पड़ा।

मल्लाह ने कहा, "महाराज, यही चश्मेशाही है।" नाव से उतर कर हमको यहाँ तक पहुंचने में आध मील चलना पड़ा था। हमने चश्मेशाही के घेरे में प्रवेश किया। घेरे के अन्दर कई प्रकार के फूलों के पौधे लगे हुए थे। जाते समय दाएँ और बाएँ दो सुन्दर देवदार लकड़ी के मकान

दिखाई दिये। इन पर जालीदार टट्टियाँ लगी हुई थीं, और दोनों के बीच में बगीचा लगा हुआ था। दाहिनी ओर वाले मकान के नीचे ही एक चश्मा है, जिसका पानी शिव-लिङ्ग के आकार के एक पत्थर के छिद्र से निकल कर बड़ी तेजी के साथ रात दिन बहा करता है। चश्मे का जल एक हौज में गिर कर नालियों द्वारा बाहर निकला करता है। यह जल मोती के समान स्वच्छ और बर्फ के सदृश ठंढा है। हमने इस जल को पिया, जिससे हमारी सारी थकावट दूर होगई। मध्यान्ह का सारा समय हमने यहीं व्यतीत किया। चलते समय एक बार फिर चश्मे के जल का आचमन कर हमने श्रीनगर लौटने का प्रस्थान किया। शिकारे तक आते आते अँधेरा होने लगा। नौका में बैठे और कुछ रात्रि बीते अपनी धर्मशाला पहुंच गये। विश्राम करने के पहले मैंने और वाजपेयी जी ने दूसरे दिन अनन्त-नाग जाने का विचार कर लिया।

१५—इस्लामाबाद या अनन्तनाग।

तारीख़ पचीस अगस्त को प्रातःकाल हम अपने सामान को ले कर पाँडे जी के यहां आ ठहरे. पाँडे जी ने अनन्त-नाग के हाई-स्कूल के हेडमास्टर के नाम एक चिट्ठी

लिख कर हमको दे दी, जिससे वहां किसी बात की तकलीफ न उठाना पड़े। श्रीनगर से लगभग चौंतीस मील की दूरी पर अनन्त-नाग नामक एक स्थान है। लोरी का किराया प्रति मनुष्य का दो रुपये से तीन रुपये तक देना पड़ते है और पूरे तांगे का सात रुपया लगता है। हम लोरी मे सवार हुए और कितनी ही चट्टियों को पार करते हुए ढाई बजे अनन्त-नाग पहुंचे। मोटर से उतर कर हेडमास्टर साहब के मकान का पता लगाया। मास्टर साहब वेरीनाग जाने की तय्यारी कर रहे थे; ऐसे ही समय में हमलोगों ने आप से भेंट की, और सेक्रेटरी आफ़ एज्युकेशन का लिखा हुआ पत्र आपके हाथ में दिया। पत्र को पढ़ कर हेड-मास्टर साहब हँसते हुए बोले, "मैं आज वेरीनाग जाने वाला था; खैर, कोई हर्ज नहीं।" आपकी बात सुनकर मुझे दुःख हुआ, और मैं अपने चित्त में सोचने लगा कि हमने आपकी यात्रा में नाहक़ बाधा डाली। मैंने मास्टर साहब से कहा, "आप हम लोगों के ठहरने का प्रबन्ध करा के वेरीनाग चले जाइये।" परन्तु मास्टर साहब ने सरलता पूर्वक उत्तर दिया, "आप हमारे यहां आये हैं, और हमारे अतिथि हैं। मैं आपका बिना पूरा प्रबन्ध किये जाना उचित नहीं समझता।" हम लोगों से बात चीत हो ही रही थी कि इतने में आपके नौकर ने कई प्याले चाय ले कर हमारे

सामने मेज पर रख दिये । मास्टर साहब ने एक एक चाय का प्याला उठा कर हम को दिया, जिसे पी कर हमने मन ही मन मास्टर साहब के अतिथि-सत्कार की प्रशंसा की । अब मास्टर साहब ने पूछा, "आप लोग यहां पर ठहरना पसन्द करेंगे या बस्ती के बाहर स्कूल में ?" हमने स्कूल में ठहरना अधिक पसन्द किया । मास्टर साहब हम को साथ ले कर स्कूल की तरफ चले । पास ही थोड़ी दूर पर एक नदी भी बहती थी । स्कूल की इमारत बस्ती के बाहर सड़क के पास एक लम्बे चौड़े मदान में है । आज कल स्कूल में छुट्टी थी । मास्टर साहब ने हम को एक अच्छे कमरे में ठहराने का इन्तज़ाम करा दिया । जब हम विश्राम कर ही रहे थे कि इतने में मास्टर साहब ने अपने घर से भोजन बनाने की सामग्री भिजवा दी । शाम को हम लोगों ने रसोई बनाना शुरू की ।

अब की बार मास्टर जी अपने साथ एक नये व्यक्ति को लाये । इन नए महाशय को देखते ही मैंने समझा, कि शायद कोई साधारण फ़क़ीर हैं । आप नङ्गे पैर और काश्मीरी पोशाक में थे । काश्मीरी पोशाक गरदन से पैर तक लम्बा एक प्रकार का ढीला ढाला चोगा होता है जिस में दो आस्तीनें रहती हैं । पूँछने पर मालूम हुआ कि आप मास्टर साहब के असिस्टण्ट हैं । दोनों मास्टरों की असाधारण सरलता से

यह न मालूम होता था कि आप दोनों एम० ए० हैं। हम लोगों की रसोई स्कूल के सामने एक मैदान में बन रही थी, जहां दोनों मास्टर आ कर बैठ गये। आपने हम से बङ्ग देश की रीति-रिवाज सम्बन्धी बहुत से प्रश्न किये। कुछ देर तक इसी प्रकार बात-चीत का आमोद प्रमोद रहा। इधर रात्रि शुरू हुई और जाड़ा भी पड़ने लगा। अब दोनों मास्टर अपने अपने मकान के लिए बिदा हुए। हम भी भोजन से छुट्टी पा कर अपने कमरे में आये। दूसरे दिन हमारे अनुरोध करने पर हेड मास्टर साहब वेरीनाग चले गये। मास्टर साहब की अनुपस्थिति में हमने कुछ इधर उधर के दृश्य देखे, जिन में से मुख्य तीन झरने थे। दो गन्धक के और एक पानी का। यहां लगभग बीस हाथ लम्बा और इतना ही चौड़ा एक तालाब भी है। तालाब के नीचे की तरफ तीन छिद्र हैं, जिनमें से अनावर्त पानी निकल कर इस तालाब में होता हुआ एक बड़े नाले के द्वारा बाहर गिरता रहता है। तालाब चारों तरफ दीवारों से घिरा है। इस के पास ही एक और छोटा गन्धक का तालाब है। यहां भी उसी प्रकार तीन छोटे छोटे छिद्रों द्वारा जल निकलता रहता है। इस जल को पी कर हमने अपनी प्यास बुझाई। यह पाचन-शक्ति को बढ़ाता है और रक्त को साफ़ करता है। चश्मों के पास ही महाराज काश्मीर के ठहरने के लिए एक कोठी

है । कोठी के इर्द गिर्द चुनारों के बड़े बड़े वृक्ष हैं । जब हम लोग कोठी को देखने जा रहे थे, रास्ते में वाजपेयी जी को अधिक भोजन कर जाने के कारण कै होना शुरू हुई । एक घण्टे तक उनका यही हाल रहा । ऐसी दशा में हम को अपना प्रोग्राम बदलना पड़ा, और आगे कहीं न जाकर वहीं से अपने डेरे पर वापस आना पड़ा ।

१६—मटन अथवा मार्त्तण्ड कुण्ड ।

तारीख छब्बीस अगस्त को कुछ जलपान कर के हम मटन के लिए रवाना हुए । यह स्थान अनन्त-नाग से लगभग छः मील दूर है । सड़क पर किसी प्रकार की चढ़ाई उतराई नहीं है, और मोटर, लोरी और तांगा इत्यादि सब आते जाते हैं । सड़क अनन्त-नाग से मटन तक सीधी चली गई है, जिसके दोनों तरफ धान के खेत हैं । खेतों को देख कर मेरे मन में यही भावना होती थी कि कदाचित् मैं बङ्गाल के किसी गांव से आ रहा हूं । पहाड़ी झरनों के जल से खेत सदा तर रहते हैं । चलते चलते जब हम मटन (सूर्य्य कुण्ड) के पास पहुंचे, सामने कुछ

पण्डे दिखलाई पड़े। संयुक्त-प्रदेश के अन्य तीर्थों की तरह ये यात्री को बड़ा परेशान करते हैं और चारों तरफ़ से घेर लेते हैं। ये बातचीत में अधिक उद्दण्ड नहीं होते। सब पण्डे हमको घेर कर सूर्यकुण्ड की प्रशंसा करते हुए हमारे साथ चलने लगे। मैंने इन से कहा, "हम यहां दान दक्षिणा देने के लिए नहीं आये हैं, किन्तु यहां के दृश्यों को देखने के लिए। आप वृथा हमारे साथ चल कर कष्ट न उठाइये। यदि आप लोगों में से कोई हमारे साथ चल कर दर्शनीय स्थानों को दिखा सके तो चले; हम उसके परिश्रम का फल दे देंगे।" उन पण्डों में से एक हमारे साथ हो लिया और बाक़ी लौट गये। पण्डा हम लोगों को लेकर सूर्यकुण्ड पहुंचा। कुण्ड के पास ही एक बड़े चुनार का वृक्ष था। इसके नीचे कपड़े रख कर हम स्नान करने लगे। कुण्ड का जल बड़ा ठंढा था और ठंढक में बर्फ़ को मात करता था। स्नान करने से हमारी थकावट जाती रही और शरीर बहुत हल्का होगया। जल में पांच या छः मिनट से अधिक रहना मनुष्य-शक्ति के बाहर था। स्नान करने के बाद हम चुनार वृक्ष के नीचे भोजन बनाने की तैय्यारी में लगे। पास ही एक छोटी सी बाज़ार है, जहां यात्रियों को आवश्यकतानुसार सामग्री मिल सकती है। हमने बाज़ार से कुछ किसमिस, बादाम, केसर और छुहारे इत्यादि ख़रीदे और पायस (अर्थात् मिष्ठान्न) बनाया।

उस झरने के जल से हमारा भोजन बड़ा स्वादिष्ट बना, जिसे खा कर हम बड़े प्रसन्न हुए। इसके पश्चात् हमने कुण्ड के आस पास दृष्टि फेंकी। पहाड़ के नीचे एक छोटा सा शिव-मन्दिर है। मन्दिर के नीचे लगभग दस हाथ लम्बा और आठ हाथ चौड़ा एक कुण्ड है, जिसे सूर्य्य-कुण्ड कहते हैं। कुण्ड के अन्दर कई झरने हैं, जिनमें से पत्थरों के बीच से जल बड़ी तेजी से निकला करता है। कुण्ड का जल लगभग दस हाथ गहरा है और बड़ा स्वच्छ है। जल की स्वच्छता के बारे में इतना लिख देना यथेष्ट होगा कि उसके नीचे की प्रत्येक कंकड़ी बिल्कुल साफ दृष्टिगोचर होती थी। कुण्ड का जल एक नाले के द्वारा एक चौकोन तालाब में जाता है। जहां से एक छोटे हवादार बैठक-खाने में होता हुआ बाहर गिरा करता है। यहां दो तालाब हैं। जिनमें मछलियां क्रीड़ा किया करती हैं। मछलियों के कौतूहल को देखने के लिए दर्शकगण भुने हुए चने या कुछ खाने की वस्तु फेंकते हैं। हमने यहां कितने ही योरोपियन्स को मछलियों की तरफ खाने की वस्तु फेंकते और उनकी क्रीड़ा के आनन्द को अनुभव करते हुए देखा। झरनों का जल क्षयी, राजक्ष्मा, मन्दाग्नि आदि बीमारियों के दूर करने में बड़ा लाभदायक है। यह मलेरिया-ज्वर-ग्रस्त रोगी के लिए रामबाण है। इस प्रदेश की जलवायु इतनी अच्छी है कि उसने एक ही सप्ताह के बाद हम पर अपना

प्रभाव दिखाया। हमारी पाचन-शक्ति बढ़ गई और भोजन की खूराक तथा शक्ति में भी वृद्धि हुई। यहां आने के पहले मुझे पैदल चलने का अभ्यास बहुत कम था, परन्तु यहां प्रत्येक दिन चलने से सोलह मील तक क अभ्यास हो गया था। मेरे बदन में फुरती आ गई थी और कार्य्य-शक्ति भी बढ़ गई थी। कुछ समय तक हम चुनार के वृक्षों के नीचे टहलते रहे। ये वृक्ष बहुत बड़े होते हैं और पत्तियां अण्डी के पत्तों की तरह होती हैं। हमारे देश से जो सज्जन जल-वायु परिवर्तन के अभि-प्राय से काश्मीर जाते हैं वे इन्हीं वृक्षों के नीचे डेरा डाल कर रहते हैं। कारण यह है कि इन वृक्षों के नीचे की वायु लाभकारी है। काश्मीर प्रदेश में चुनार के पेड़ प्रायः हर स्थान पर पाये जाते हैं। यहां से आगे अमर-नाथ नामक तीर्थ स्थान है। अनन्तनाग से अमरनाथ की चोटी तक बड़े बड़े सुन्दर दृश्य हैं। अमरनाथ जाते समय रास्ते में अछ, पहलगांव, चन्दनबाड़ी, शेषनाग और पंच-तरण इत्यादि चट्टियां मिलती हैं। अमरनाथ में श्रावण की पूर्णिमा को शिव, पार्वती तथा गणेश जी की मूर्तियों के बर्फ़ के मध्य में दर्शन होते हैं। जो महाशय बर्फ़ का दृश्य देखना चाहें उन्हें अमरनाथ से बढ़ कर कहीं अच्छी जगह न मिलेगी। दिन के साढ़े तीन बजे के समय हम सूर्य्यकुण्ड से अपने डेरे के लिए विदा हुए। लौटती बार हमने एक पहाड़ी रास्ता लिया।

रास्ते में हम को अनेक प्रकार के वृक्षों के जङ्गल मिले। बीच बीच में कितने ही झरने भी थे। जहां कहीं हमको कोई अद्भुत पत्ती देख पड़ती, हम उसको तोड़ लेते थे और उसकी सुन्दरता पर विचार कर के मुग्ध हो जाते थे। कभी कभी वाजपेयी जी इन पत्तियों को ले कर स्वाद चखते थे और किसी किसी पत्ती में अपनी प्यारी वस्तु भङ्ग के महक होने की बात कहते थे। कुछ दूर चलने पर हम को एक बड़े झरने का शब्द सुनाई दिया। धीरे धीरे हमने जल को एक पहाड़ के ऊपर झरने से गिर कर चुनार के वृक्षों की शीतल छाया में बहते हुए देखा। झरने के पास एक चुनार के वृक्ष के नीचे एक महात्मा जी कुटी बना कर रहते हैं। कुटी के सामने बहते हुए जल पर एक मचान बना हुआ था, जिस पर हम लोग बैठ कर आस पास की शोभा देखने लगे। महात्मा जी ने कुटी के चारों तरफ़ सेव और अख़रोट लगा रक्खे थे और कहीं कहीं अंगूर के गुच्छे उस पर लटक कर उसकी शोभा को दूनी कर रहे थे। लोग इस स्थान को गौतमनाग कहते हैं और उनका कथन है कि किसी समय यहां गौतम ऋषि रहते थे। इस तपोभूमि की प्रत्येक वस्तु चित्त को आकर्षित करनेवाली है। यहां आने से संसार की सारी चिन्ताएँ दूर हो जाती हैं और मन बड़ा प्रसन्न हो जाता है। यहां से कुछ दूरी पर हमने कुछ लड़कों को

गायें चराते हुए देखा। इन को पास बुला कर हमने कुछ प्रश्न किये जिनका उत्तर ये न दे सके। कारण यह था कि ये हमारी भाषा नहीं समझते थे। अब हमने इशारों से कुछ कहा, जिस को वे समझ गए। एक लड़के को हमने कुछ पैसे दे कर फल मँगवाए, जिन को अपने साथ ले लिये। पहाड़ के ऊपर बहते हुए झरने को देखने के लिए हमने ऊपर चढ़ना शुरू किया; परन्तु सन्ध्या हो चली थी और जाना दूर था, इसलिए हम झरने की अन्तिम सीमा तक न पहुंच सके। पहाड़ के ऊपर चढ़ने के समय हम को कुछ सुगन्ध मालूम हुई। आगे चलने पर महक बढ़ती गई और सारा जङ्गल सुगन्ध-मय जान पड़ा। कुछ समय हम लोगों ने उस पेड़ की खोज करने में खर्च किया, जहां से सुगन्ध आ रही थी। हमारा परिश्रम अन्त में सफल हुआ और हम ने वृक्ष का पता लगा लिया। यह एक धूप का पेड़ था जिसके कितने ही स्थानों के छिलके उतार लिये गये थे। जगह जगह पेड़ पर गोंद निकल कर जम रहा था जिसमें से कुछ हमने अपने साथ ले लिया। पहाड़ से उतरने पर हम महात्मा जी के दर्शन करने के लिए कुटी में गये। आप इसी प्रदेश के निवासी हैं और आपका धार्मिक ज्ञान बहुत बढ़ा चढ़ा है। आप से बात चीत करने से हम को बड़ी खुशी हुई। अब अँधेरा हो चला, इसलिए हम को चलने

रास्ते में हम को अनेक प्रकार के वृक्षों के जङ्गल मिले। बीच बीच में कितने ही झरने भी थे। जहां कहीं हमको कोई अद्भुत पत्ती देख पड़ती, हम उसको तोड़ लेते थे और उसकी सुन्दरता पर विचार कर के मुग्ध हो जाते थे। कभी कभी वाजपेयी जी इन पत्तियों को ले कर स्वाद चखते थे और किसी किसी पत्ती में अपनी प्यारी वस्तु भङ्ग के महक होने की बात कहते थे। कुछ दूर चलने पर हम को एक बड़े झरने का शब्द सुनाई दिया। धीरे धीरे हमने जल को एक पहाड़ के ऊपर झरने से गिर कर चुनार के वृक्षों की शीतल छाया में बहते हुए देखा। झरने के पास एक चुनार के वृक्ष के नीचे एक महात्मा जी कुटी बना कर रहते हैं। कुटी के सामने बहते हुए जल पर एक मचान बना हुआ था, जिस पर हम लोग बैठ कर आस पास की शोभा देखने लगे। महात्मा जी ने कुटी के चारों तरफ़ सेब और अख़रोट लगा रक्खे थे और कहीं कहीं अंगूर के गुच्छे उस पर लटक कर उसकी शोभा को दूनी कर रहे थे। लोग इस स्थान को गौतमनाग कहते हैं और उनका कथन है कि किसी समय यहां गौतम ऋषि रहते थे। इस तपोभूमि की प्रत्येक वस्तु चित्त को आकर्षित करनेवाली है। यहां आने से संसार की सारी चिन्ताएँ दूर हो जाती हैं और मन बड़ा प्रसन्न हो जाता है। यहां से कुछ दूरी पर हमने कुछ लड़कों को

गायें चराते हुए देखा। इन को पास बुला कर हमने कुछ प्रश्न किये जिनका उत्तर ये न दे सके। कारण यह था कि ये हमारी भाषा नहीं समझते थे। अब हमने इशारों से कुछ कहा, जिस को वे समझ गए। एक लड़के को हमने कुछ पसे दे कर फल मँगवाए, जिन को अपने साथ ले लिये। पहाड़ के ऊपर बहते हुए झरने को देखने के लिए हमने ऊपर चढ़ना शुरू किया; परन्तु सन्ध्या हो चली थी और जाना दूर था, इसलिए हम झरने की अन्तिम सीमा तक न पहुंच सके। पहाड़ के ऊपर चढ़ने के समय हम को कुछ सुगन्ध मालूम हुई। आगे चलने पर महक बढ़ती गई और सारा जङ्गल सुगन्ध-मय जान पड़ा। कुछ समय हम लोगों ने उस पेड़ की खोज करने में खर्च किया, जहां से सुगन्ध आ रही थी। हमारा परिश्रम अन्त में सफल हुआ और हम ने वृक्ष का पता लगा लिया। यह एक धूप का पेड़ था जिसके कितने ही स्थानों के छिलके उतार लिये गये थे। जगह जगह पेड़ पर गोंद निकल कर जम रहा था जिसमें से कुछ हमने अपने साथ ले लिया। पहाड़ से उतरने पर हम महात्मा जी के दर्शन करने के लिए कुटी में गये। आप इसी प्रदेश के निवासी हैं और आपका धार्मिक ज्ञान बहुत बढ़ा चढ़ा है। आप से बात चीत करने से हम को बड़ी खुशी हुई। अब अँधेरा हो चला, इसलिए हम को चलने

की फिक्र हुई। महात्मा जी से विदा मांग कर हमने अपनी राह ली। पहाड़ी दृश्यों को देखते हुए रात्रि को लगभग आठ बजे हम अपने डेरे पर पहुंचे। आ कर हमने रास्ते के लाये हुए फलों को खाया और बाजपेयी जी को चाय तैय्यार करने के लिए कहा गया। आपने नशे की पीनक में बहुत ज्यादा चाय ले कर उसे बड़ी देर तक पकाया। जब बिल्कुल सुर्ख हो गई, हमारे सामने पीने के लिए रक्खी। मैंने बाजपेयी जी से कहा, "क्या आप ने स्वर्ण-सेन्दुर बनाया है या चाय?" आप बोले, "चाय ज़रा ज्यादा आंच खा गई, कोई हर्ज नहीं है।" थोड़ी चाय पी कर जब हम विश्राम करने लगे, बाजपेयी जी की कृपा से सारी रात जागना पड़ा। आप नशे में सारी रात बातें करते रहे।

१७—अछबल।

तारीख सत्ताईस अगस्त को नित्यकर्म्मों से छुट्टी पा कर हम अछबल का चश्मा देखने के लिए चले। अछबल यहां से लगभग सात मील दूरी पर है। सड़क के चारों तरफ़ ऊँचे नीचे धान के खेत हैं, और बाएँ तरफ़

एक नदी बहती है। मोटर, ताँगे इत्यादि सब यहाँ आया जाया करते हैं। आपस में बात चीत करते हुए लगभग नौ बजे हम अछबल की बाज़ार होते हुए झरने के पास पहुंचे। एक मैदान में बहुत से चुनार के पेड़ थे, जिनकी शीतल छाया में धनाढ्य पुरुषों के तम्बू लगे हुए थे। झरने का जल एक बाड़े के भीतर से निकल कर चट्टानों के ऊपर से बहता हुआ बड़ी ज़ोर से आवाज़ के साथ नीचे गिर रहा था। हम दाहिने चबूतरे पर पहुंचे और वहीं ठहरे। स्नान करके चाय तय्यार की; जिसको पीकर भोजन की तय्यारी की। भोजन करने के उपरान्त हमने बाड़े में प्रवेश किया। पहला क़दम बढ़ाते ही हमको सामने एक बड़ा विशाल पर्व्वत दिखाई दिया। पहाड़ के तीनों तरफ़ घिरी हुई पक्की दीवारें हैं और बाड़े के बीच में शाहजहां बादशाह का बनवाया हुआ एक लकड़ी का सुन्दर भवन है। सुना जाता है कि गर्मी के दिनों में बादशाह इसी महल में रहते थे। महल के आगे और पीछे दो तालाब हैं, जिनके चारों तरफ़ अनेक प्रकार के फूलों के पौधे लगे हुए हैं। झरने का जल इन्हीं तालाबों में आकर महल के नीचे से बहता हुआ दीवारों के बाहर गिरा करता है। बाड़ा मिट्टी की सहायता से एक ऊँचे स्थान पर बनाया गया है, जिसकी दीवारों के किनारे किनारे तीन तरफ़ से सेव, नाशपाती, अञ्जीर और

अखरोट आदि मेवों से लदे हुए पेड़ झुके रहते हैं। तालाबों में लगभग सवा-सौ क़तारबन्द फ़ौव्वारे हैं, जो सदा जल को ऊपर की ओर फेंका करते हैं। आगे बढ़ने पर हम को पहाड़ से लगा हुआ एक बड़ा लम्बा चौड़ा चबूतरा मिला, जिसके ऊपर वायु-विलास के लिए एक छोटा सा बैठकख़ाना बना हुआ था। यहाँ बैठने से बड़ी शीतल और सुगन्धित वायु मिलती है। पहाड़ की तरफ़ एक बड़ा घना जंगल है, जिधर देखने से तीन गुफाएँ देख पड़ती हैं। ये वास्तव में गुफाएँ नहीं हैं किन्तु झरने हैं, जिन्हें किसी प्राचीन बादशाह ने बनवा कर झरनों की शोभा को बढ़ा दिया है। जब हम समीप गए तो ये गुफाएँ हमको झरने दिखलाई पड़े, जो छोटे छोटे कुण्ड की आकृति में थे। ये कुण्ड बड़े गहरे थे, जिनमें झरनों से बड़ी तेज़ी से पानी निकलने के कारण जल की सतह चक्कर लगा रही थी। जल चबूतरों के नीचे से बह कर तालाबों में गिर रहा था। बाड़े के अन्दर हम ने जिधर देखा, हमको जल ही जल का अपूर्व दृश्य दिखाई दिया। बाड़े के भीतर एक कुञ्ज-वन है। यहां भी जल ही जल की शोभा देखने योग्य है। कुञ्ज-वन की प्रत्येक वस्तु ने हमारे चित्त को मोह लिया। जिन पुरुषों को अपने रोग और शोक मिटाने हों, उनको यहीं शांति मिल सकती है। शैलराज की इस

शोभा को हम और अधिक समय तक न देख सके। सूर्य-नारायण ने सन्ध्या देवी के आगमन की सूचना हम को दे दी, इसलिए हमारी चलने की इच्छा न होने पर भी हम को विवश हो कर चलना पड़ा। रास्ते में अनेक रंग के पक्षियों का कलरव सुनते हुए और पहाड़ी दृश्य देखते हुए हम साढ़े आठ बजे अनन्तनाग पहुँच गये।

अनन्तनाग से सोलह मील की दूरी पर वेरीनाग नामक प्रसिद्ध जल-प्रपात है, जहां से झेलम अर्थात् वितस्ता नदी निकली है। अनन्तनाग में दीवानी और फ़ौजदारी अदालतें तथा तहसीली हैं। तारीख़ अट्ठाईस अगस्त को दिन के दस बजे हम अनन्तनाग से श्रीनगर के लिए रवाना हुए। मार्ग में हम को अवन्तिपुर नामक एक गाँव मिला, जहाँ बुद्ध के समय की मूर्त्तियां और प्राचीन मकानों का भग्नावशेष खोद खोद कर निकाला जा रहा था। कुछ आगे चल कर लग भग तीन बजे के समय हमारा ताँगा पम्पापुर नामक स्थान पर पहुंचा। पम्पापुर में केसर की खेती अधिक होती है। खेत मिट्टी की सहायता से छोटे छोटे चौकोन टीले के समान बनाए जाते हैं। इनकी क़तार बन्द क्यारियों में केसर बोई जाती है। फ़सल घास के समान क्यारियों में चारों तरफ़ जम जाती है। यह भादों में बोई जाती है और कार्तिक के अन्त में काटी जाती है। लोगों का कथन है कि जिस समय

पौधों मे फूल आते हैं, सुगन्ध बहुत दूर तक व्याप्त हो जाती है । पौधों के फूल ही को असली केसर कहते हैं । अनेक स्थानों को देखते हुए रात्रि के साढ़े सात बजे के लगभग हम श्रीनगर पहुंचे । अपने स्थान पर पहुंच कर हम लोगों ने जलपान किया, और बिछौनों पर जा कर विश्राम करने लगे।

१८—शालामार बाग़ तथा निसात बाग़ ।

तारीख़ उन्तीस अगस्त को हमने बीस आने में एक शिकारा किराये पर किया और शालामार बाग़ तथा निसात बाग़ देखने के लिए निकले । श्रीनगर से शालामार बाग़ लगभग बारह मील की दूरी पर है, और निसात बाग़ लगभग आठ मील की दूरी पर । शालामार बाग़ पहुंचने पर हमने देखा कि यहां आने के लिए मोटर और तांगे का भी रास्ता है । बाग़ दो भागों में विभक्त है और एक मील की सीमा में बना हुआ है । इस में नाना प्रकार के अनेक रङ्गों के फूल हैं और बीच बीच में बढ़िया पत्थर के खम्भों की बारहदरी बनी है । बारहदरी के आगे और पीछे छोटे और बड़े हौज़ हैं, जिन में फौव्वारे लगे हुए हैं । हौज़ में पहाड़ी

झरनों से जल आता है और फ़ौव्वारे चला करते हैं। जिस समय हम गये थे; जल का अभाव था। इस कारण से फूलों से हरा बाग़ भी फीका मालूम होता था। कहा जाता है कि इस बग़ीचे को बादशाह अकबर ने बनवाया था। चारों तरफ़ घूम फिर कर हम अपने शिकारे में आ बैठे और निसात बाग़ पहुंचे। यह बाग़ ऊलर झील के किनारे चुनारों के सघन पेड़ों के बीच एक ऊंचे स्थान पर बना हुआ है। भारतवर्ष में यह बग़ीचा अद्वितीय है, जिसे देखने के लिए नित्यप्रति अनेक मनुष्य दूर दूर से आया करते हैं। विशेषकर रविवार के दिन यहां जल की बहार देखने योग्य है, क्योंकि उस दिन पहाड़ी नहर से पानी पूरे वेग से छोड़ा जाता है, जिससे बाग़ की शोभा और भी बढ़ जाती है। यहां अनेक माली सदा काम किया करते हैं और सर्व साधारण के बैठने के लिए बेञ्चें पड़ी रहती हैं। फूलों के अतिरिक्त यहां फल के भी अनेक पेड़ हैं। फाटक में प्रवेश करने पर कई सीढ़ियों को पार करने के बाद हरी घास के ऊपर एक लकड़ी का दो मंज़िला मकान देख पड़ता है। ऊपर चढ़ने पर हरी घास के मैदान पर फिर बग़ीचा मिलता है। जिसमें कई फ़ौव्वारे हैं, और कई चबूतरे हैं। चबूतरों पर चढ़ने के लिए कहीं सीढ़ियां और कहीं मिट्टी ढाल करके बिछाई गई है। कई स्थानों पर लोहे की जालीदार टट्टियां

हैं, जिन पर से होकर पानी नीचे गिरता है। उसकी तरफ़ देखने से ऐसा मालूम होता है मानों सैकड़ों छोटे बड़े सर्प ऊपर से नीचे उतर रहे हैं। यहां की शोभा रविवार को देखने में अच्छी तरह आती है। बगीचे के नीचे हाउसबोट, शिकारे, मोटर और तांगों की भरमार रहती है। इस दिन एक प्रकार का छोटा मेला सा लग जाता है। रोगी धनाढ्य पुरुष अपनी तन्दुरुस्ती ठीक करने के लिए यहां खीमे लगा कर रहते हैं। बगीचे के सब से ऊंचे चबू-तरे पर चढ़ कर देखने से नीचे की तरफ़ एक अद्भुत समा दिखाई देता है।

बगीचे के पीछे ही एक पहाड़ लगा हुआ है। यहां टहलते हुए हमने भोर के कर्म्मचारी जी को आते हुए देखा। आप अपने युवराज सहित बहुत से नौकरों को लिये हुए चले आ रहे थे। युवराज काश्मीर महाराज की टमटम में थे। दौड़ती हुई नावों को जल में देख कर युवराज बड़े प्रसन्न हुए और आपकी भी इच्छा हुई कि एक शिकारे में बैठ कर जल-विहार करें। आपने कर्म्मचारी जी को एक शिकारा कुछ देर के लिए लाने को कहा परन्तु वे न ला सके क्योंकि सब नौकाएं किसी न किसी पुरुष के साथ थीं। आप निराश होकर लौट आये। जब मुझ से भेंट हुई, आपने शिकारा न मिलने का वृत्तान्त कहा। मैंने तुरन्त

अपना शिकारा दे देने का वचन दिया । युवराज यह सुन कर बड़े प्रसन्न हुए और आपने अपनी टमटम हमको श्रीनगर जाने के लिए दे दी । हम लोग इसमें सवार हो कर पहाड़ी चढ़ाइयों को तय करते हुए रात्रि को आठ बजे अपने डेरे पर आ पहुंचे । श्रीनगर में दो दिन रह कर हमने गन्धर्बल और खीर भवानी जाने का बिचार किया ।

१६—गन्धर्बल ।

श्रीनगर से गन्धर्बल तेरह या चौदह मील दूर है । यहां शिकारे, मोटर और तांगे इत्यादि सब जा सकते हैं । तांगे में जाने का किराया छः या सात रुपया और शिकारे में तीन या साढ़े तीन रुपया लगता है । अधिकतर मनुष्य शिकारों में ही जाते हैं । हम अपने आवश्यकीय सामान को साथ लेकर तारीख़ पहली सितम्बर को गन्धर्बल के लिए निकले । हमारी यह यात्रा प्रातःकाल साढ़े आठ बजे एक शिकारे में आरम्भ हुई । शिकारा चलाने के पहले मल्लाह ने हम से पूंछा कि आप जल्दी की रास्ता से जाना पसन्द करेंगे या देरी की राह से । हम लोगों ने जल्दी की रास्ता

से जाना पसन्द किया। आगे चलने पर हमको अपने इस निर्णय पर पश्चात्ताप करना पड़ा, क्योंकि यह रास्ता इतना दुर्गन्धित था कि चलना कठिन था। भाग्यवश कुछ आगे चल कर हमको रास्ता साफ मिला। जल के दोनों किनारों पर असंख्य सेब, नाशपाती और दूसरे फलों के पेड़ फलों से लदे हुए जल को चूम रहे थे। ये पेड़ बहुत दूरी तक दोनों तरफ लगे थे। जिनके बीच में हो कर हमारा शिकारा जा रहा था। ऊलर झील के कुछ अंश को पार करने के बाद हम सिन्धु नदी में पहुंचे। सिन्धु नदी गन्धर्बल के कुछ आगे चल कर निकली है। इसलिए यहां इसकी चौड़ाई बहुत कम है यद्यपि नदी यहां सकड़ी है परन्तु उसके जल का प्रवाह जोरों पर रहता है। लगभग तीन बजे हमको एक ऊंची टेकरी देख पड़ी। जिसके नीचे सिन्धु नदी बहती थी और उसमें अनेक शिकारे और हाउस-बोट्स तैरते फिरते थे। टेकरी के आसपास चुनारों के कतार-बन्द पेड़ थे, जिनकी शीतल छाया से उसकी शोभा बढ़ रही थी। नदी के उस पार दृष्टि डालने से तीन तरफ पहाड़ और बीच बीच में खेत दिखाई देते थे। गन्धर्बल के ऊंचे टीले पर हरी घास में धनाढ्य पुरुष और योरोपियन लोगों के अनेक तम्बू लगे रहते हैं। गन्धर्बल का टीला सिन्धु नदी के किनारे ही किनारे बड़ी दूर तक चला गया है और इस पर चुनारों

से जाना पसन्द किया। आगे चलने पर हमको अपने इस निर्णय पर पश्चात्ताप करना पड़ा, क्योंकि यह रास्ता इतना दुर्गन्धित था कि चलना कठिन था। भाग्यवश कुछ आगे चल कर हमको रास्ता साफ मिला। जल के दोनों किनारों पर असंख्य सेब, नाशपाती और दूसरे फलों के पेड़ फलों से लदे हुए जल को चूम रहे थे। ये पेड़ बहुत दूरी तक दोनों तरफ लगे थे। जिनके बीच में हो कर हमारा शिकारा जा रहा था। उलर झील के कुछ अंश को पार करने के बाद हम सिन्धु नदी में पहुंचे। सिन्धु नदी गन्धर्बल के कुछ आगे चल कर निकली है। इसलिए यहां इसकी चौड़ाई बहुत कम है यद्यपि नदी यहां सकड़ी है परन्तु उसके जल का प्रवाह जोरों पर रहता है। लगभग तीन बजे हमको एक ऊंची टेकरी देख पड़ी। जिसके नीचे सिन्धु नदी बहती थी और उसमें अनेक शिकारे और हाउस-बोट्स तैरते फिरते थे। टेकरी के आसपास चुनारों के कतार-बन्द पेड़ थे, जिनकी शीतल छाया से उसकी शोभा बढ़ रही थी। नदी के उस पार दृष्टि डालने से तीन तरफ पहाड़ और बीच बीच में खेत दिखाई देते थे। गन्धर्बल के ऊंचे टीले पर हरी घास में धनाढ्य पुरुष और योरोपियन लोगों के अनेक तम्बू लगे रहते हैं। गन्धर्बल का टीला सिन्धु नदी के किनारे ही किनारे बड़ी दूर तक चला गया है और इस पर चुनारों



के पेड़ क्रमारबन्ध्र लगे हुए हैं। यहां सिन्धु के किनारे कई प्रकार के छोटे बड़े पत्थर देखने में आते हैं। नदी इतनी वक्र-गति से यहां घूमी है कि इसकी शोभा देखने योग्य है। हमारे गन्धर्बल पहुंचते ही चारों ओर से बादल घिर आये और पानी की बूँदें रह रह कर गिरने लगीं। यहां आने से सांसारिक पुरुषों को बड़ी शान्ति मिलती है। हमको यही मालूम होता था मानों हम गन्धर्बलोक में आ पहुंचे। अब दिन बहुत थोड़ा रह गया था। इसलिए हमको समय के अभाव से विवश हो कर खीर भवानी जाना पड़ा।

२०—खीर भवानी।

गन्धर्बल से खीर भवानी पहुंचने के लिए चार मील की यात्रा करनी पड़ती है। यहां तांगे और मोटर नहीं जा सकते किन्तु टट्टू और कुली मिल सकते हैं। खीर भवानी जाने के लिए टट्टू का किराया बारह आने से चौदह आने तक और कुली (जिसे यहां मोटिया कहते हैं) की मजदूरी चार आने से छः आने तक है। कुछ दूर चलने पर हम को गन्धर्बल की एक छोटी सी बाज़ार मिली, तथा

पोस्ट-आफ़िस और डाक-बँगला भी मिला। और आगे बढ़ने पर हम को सिन्धु नदी का पुल मिला, जहां नदी में पानी बहुत कम था। रास्ते में पहाड़ों की श्रेणियाँ देखने में बहुत अच्छी मालूम होती थीं, और ऊंचे नीचे स्थानों में कहीं २ तम्बू दिखलाई पड़ते थे। चलते चलते जब हम खीर भवानी से एक मील की दूरी पर रह गए, सन्ध्या व्यतीत हो चली और बादलों से अन्धकार छा गया। अकस्मात् एक बड़े ज़ोर का तूफ़ान आ गया, जिस से हम बड़ी विपत्ति में पड़ गए। हम पैदल तो थे ही, अब हमने दौड़ शुरू की। थोड़ी देर बाद ज़ोर की वर्षा होने लगी और हमारे कपड़े-लत्ते सब भीग गए। खीर भवानी के बाज़ार में पहुंचने पर हम पानी से बच सके। लोगों से पूँछने पर मालूम हुआ कि पास ही एक धर्म्मशाला है। यहां पहुंचने पर हमने इसको बड़ी बुरी दशा में पाया। खिड़कियां और दरवाज़े सब टूटे हुए थे, इसलिए वायु और पानी की बौछारें बे-रोक-टोक भीतर तक आ सकती थीं। हमने अपनी रक्षा के लिए अपने भीगे हुए कपड़े आस-पास बांध दिये, जिस से पानी से कुछ रक्षा हो सके। एक जगह सामान रख कर कुछ देर विश्राम किया। धर्म्मशाला का कोई भाग ऐसा न था जो भीगा न होता, क्योंकि छत से पानी टपकता था और आस-पास खुला होने के कारण वायु की सहायता से बौछारें भीतर आ सकती थीं।

पाठको ! हमारे लिए यह समय बड़ी विपत्ति का था जिसे हम कभी नहीं भूलेंगे। ज्यों ज्यों रात्रि बढ़ती जाती थी, जाड़ा अधिक होता जाता था। रात्रि के ग्यारह बजे के लगभग पानी बन्द हुआ परन्तु तूफ़ान उसी प्रकार रहा। वायु के वेग को देखने से ऐसा मालूम होता था मानों वह पहाड़ों और धर्म्मशाला को उड़ा ले जाना चाहती है।

मैंने बाजपेयी जी को धर्म्मशाला के बाहर भेजा और उन से एक बनिये के यहां से कुछ चटाई के टुकड़े और भोजन बनाने की सामग्री लाने के लिए कहा। चटाई के टुकड़े हमने अपने कपड़ों के स्थान पर बांध दिये और भोजन बनाना शुरू किया। भोजन बनाते समय वायु के वेग से चटाइयां खुल जाती थीं और आग के अङ्गार चूल्हे से निकल निकल कर चारों ओर फैल जाते थे। हम अँगारों के पीछे दौड़ते थे और उन को पानी से बुझा देते थे। जैसे तैसे भोजन बना खा कर हम निश्चिन्त हुए, परन्तु रात्रि भर हम को तूफ़ान और वर्षा का सामना करना पड़ा। प्रातःकाल होते ही तूफ़ान और वर्षा दोनों बन्द हो गए, परन्तु आकाश काली घटाओं से घिरा रहा। धूप न निकलने के कारण दिन ख-राब था परन्तु तिस पर भी हम खीर भवानी के दर्शन करने के लिए निकले। खीर भवानी (अर्थात् योगमाया) का मन्दिर एक छोटे कुण्ड के बीच में है। मन्दिर बहुत छोटा है और

कुण्ड के बाहर खड़े हो कर देखने से मूर्त्ति के दर्शन हो सकते हैं। कुण्ड के बाहर से मन्दिर तक पहुंचने के लिए एक लकड़ी के तख्ते पर से जाना पड़ता है। कुण्ड के चारो तरफ़ पत्थर की फ़र्श है, जहां जगह जगह चुनार के वृक्ष होने के कारण बड़ी शीतल छाया रहती है। फ़र्श के किनारे पर बनियों और पण्डों के मकान हैं। मकानों के पीछे तीन तरफ़ पहाड़ी नहर है। इस में स्नान करने के लिए उत्तर की तरफ़ जनाने और मरदाने पक्के घाट बने हुए हैं। बहुत से आदमी यहां आ कर पूजा और हवन किया करते हैं। क्षीर भवानी से सोलह मील पश्चिम की तरफ़ रावण-हृदय नामक एक झील है। भादों के महीने में यहां के निवासी अपने घर के मृतकों की अस्थियां इस झील में डालते हैं। झील तक पहुंचने के लिए कुछ दूर बर्फ़ पर चलना पड़ता है। क्षीर भवानी के दर्शन कर के डेढ़ बजे हमने यहां से श्रीनगर जाने का विचार किया। एक शिकारे में बैठ कर बड़ी झील से रवाना हुए। हमारी यात्रा के समय भी सूर्य्यदेव बादलों में छिपे हुए थे। मार्ग की अपूर्व शोभा थी। जिधर देखिये उधर प्रकृति देवी का अद्भुत चमत्कार दिखाई देता था। हमारे शिकारे के दोनों तरफ़ अगणित कमल के फूल खिले हुए थे। कुछ देर बाद सूर्य्यास्त का समय हो आया। सूर्य्य की किरणों के पद्म के पत्तों के ऊपर गिरने से पानी की बूंदों की चमक

ऐसी मालूम होती थी कि जिस के आगे मोती और पुखराज भी लज्जित होते थे। ऊपर की ओर आकाश में एक तरफ़ तीन इन्द्र-धनुष अलग शोभा दे रहे थे। झील के किनारे पर बड़े बड़े पर्व्वत थे, जिन के नीचे सफ़ेदा के क़तारबन्द वृक्ष लगे हुए थे। हमारे मार्ग में कभी कभी आकाश से पानी की बूँदें भी गिरती जाती थीं। इस प्रकार रास्ते की शोभा देखते हुए तारीख़ दो सितम्बर को रात्रि के नौ बजे हम श्रीनगर में अपने डेरे पर पहुंचे।

२१—श्रीनगर में कुछ दिन।

श्रीनगर काश्मीर की राजधानी है। यह शहर झेलम नामक नदी के दोनों तरफ़ बसा हुआ है। झेलम से अनेक नहरें निकाली गई हैं, जिससे शहर की शोभा अधिक बढ़ गई है। नहरों की अधिकता से एक लाभ और पहुँचा है वह यह है कि झील तथा पहाड़ी नदियों में आने जाने की बड़ी सुविधा हो गई है। झेलम के दोनों ओर देवदार की लकड़ी के दुमँजिले और तिमँजिले सुन्दर मकान हैं। मकानों की छत मिट्टी से पटी रहती हैं और उस पर प्रायः

कुण्ड के बाहर खड़े हो कर देखने से मूर्ति के दर्शन हो सकते हैं । कुण्ड के बाहर से मन्दिर तक पहुंचने के लिए एक लकड़ी के तख्ते पर से जाना पड़ता है । कुण्ड के चारों तरफ़ पत्थर की फ़र्श है, जहां जगह जगह चुनार के वृक्ष होने के कारण बड़ी शीतल छाया रहती है । फ़र्श के किनारे पर बनियों और पण्डों के मकान हैं । मकानों के पीछे तीन तरफ़ पहाड़ी नहर है । इस में स्नान करने के लिए उत्तर की तरफ़ जनाने और मरदाने पक्के घाट बने हुए हैं । बहुत से आदमी यहां आ कर पूजा और हवन किया करते हैं । खीर भवानी से सोलह मील पश्चिम की तरफ़ रावण-हृदय नामक एक झील है । भादों के महीने में यहां के निवासी अपने घर के मृतकों की अस्थियां इस झील में डालते हैं । झील तक पहुंचने के लिए कुछ दूर बर्फ़ पर चलना पड़ता है । खीर भवानी के दर्शन कर के डेढ़ बजे हमने यहां से श्रीनगर जाने का विचार किया । एक शिकारे में बैठ कर बड़ी झील से रवाना हुए । हमारी यात्रा के समय भी सूर्य्यदेव बादलों में छिपे हुए थे । मार्ग की अपूर्व्व शोभा थी । जिधर देखिये उधर प्रकृति देवी का अद्भुत चमत्कार दिखाई देता था । हमारे शिकारे के दोनों तरफ़ अगणित कमल के फूल खिले हुए थे । कुछ देर बाद सूर्य्यास्त का समय हो आया । सूर्य्य की किरणों के पद्म के पत्तों के ऊपर गिरने से पानी की बूंदों की चमक

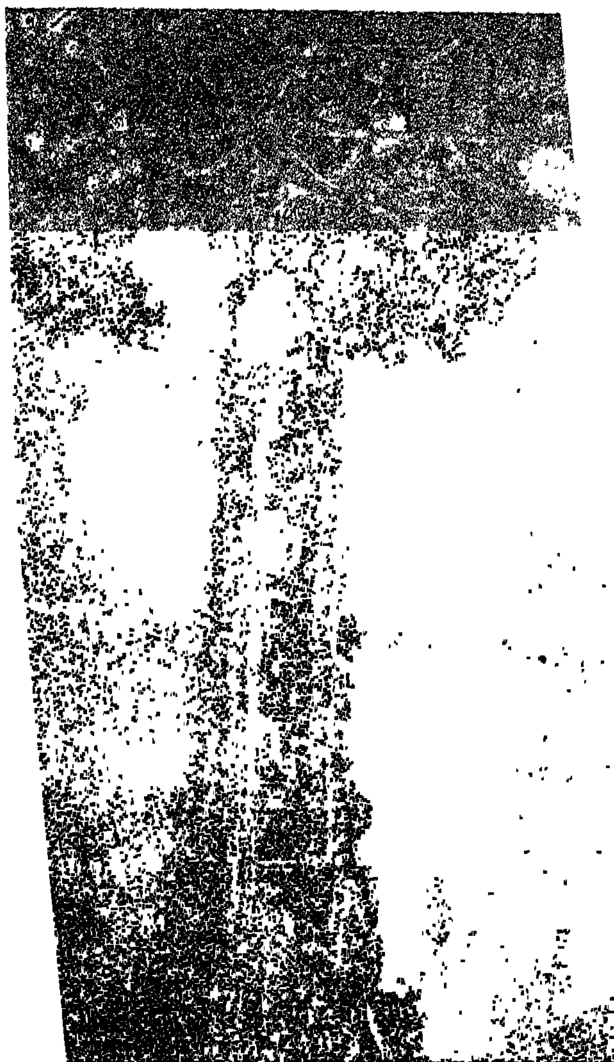
ऐसी मालूम होती थी कि जिस के आगे मोती और पुखराज भी लज्जित होते थे। ऊपर की ओर आकाश में एक तरफ़ तीन इन्द्र-धनुष अलग शोभा दे रहे थे। झील के किनारे पर बड़े बड़े पर्व्वत थे, जिन के नीचे सफ़ेदा के क़तारबन्द वृक्ष लगे हुए थे। हमारे मार्ग में कभी कभी आकाश से पानी की बूँदें भी गिरती जाती थीं। इस प्रकार रास्ते की शोभा देखते हुए तारीख़ दो सितम्बर को रात्रि के नौ बजे हम श्रीनगर में अपने डेरे पर पहुंचे।

२१—श्रीनगर में कुछ दिन।

श्रीनगर काश्मीर की राजधानी है। यह शहर झेलम नामक नदी के दोनों तरफ़ बसा हुआ है। झेलम से अनेक नहरें निकाली गई हैं, जिससे शहर की शोभा अधिक बढ़ गई है। नहरों की अधिकता से एक लाभ और पहुँचा है वह यह है कि झील तथा पहाड़ी नदियों में आने जाने की बड़ी सुविधा हो गई है। झेलम के दोनों ओर देवदार की लकड़ी के दुमँजिले और तिमँजिले सुन्दर मकान हैं। मकानों की छत मिट्टी से पटी रहती हैं और उस पर प्रायः

घास लगा दी जाती है जिससे छत की मिट्टी पानी बरसने से बह न जाय। नदी के इस पार से उस पार आने जाने के लिए एक ही प्रकार के लकड़ी के सात पुल हैं, जिन के नाम ये हैं :—

(१) अमीरा क़दल (२) हबा क़दल, (३) फते क़दल (४) जैना क़दल (५) अली क़दल (६) नया क़दल और (७) सफा क़दल। शहर के मुहल्लों के नाम प्रायः पुलों के नाम से रखे गए हैं। बाजारों में सब से प्रसिद्ध अमीरा क़दल का बाजार है, जहाँ कई अंग्रेजी कम्पनियाँ और एजन्सियाँ हैं। शहर के भीतर से बाहर जाने के लिए और बाहर से भीतर आने के लिए प्रत्येक नहर में फाटक हैं। ये फाटक रात्रि के समय बन्द रहते हैं और दिन को खोल दिये जाते हैं। शहर को चारों ओर से बड़े बड़े पर्व्वत घेरे हुए हैं। श्रीनगर से बत्तीस मील की दूरी पर "गुलेमुर्ग" नामक एक स्थान है, जहाँ मोटर और ताँगे इत्यादि आ जा सकते हैं। गरमी के दिनों में गुलेमुर्ग में बरफ के ढेर लगे रहते हैं इसलिए अधिकतर अंग्रेज लोग यहीं रहना पसन्द करते हैं। जाड़े में यहाँ बहुत ठंढ पड़ती है इस लिए सब लोग यहाँ से चले जाते हैं। काश्मीर में कई जगह गुफाएँ हैं जहाँ प्रायः मनुष्य आया जाया करते हैं। प्रथम पुल के आगे शेरगढ़ी नामक स्थान पर झेलम के



किनारे महाराज काश्मीर का एक विशाल भवन है। अमीरा क़दल बाज़ार में कई होटल तथा दो धर्म्मशाले हैं। एक धर्म्मशाला सिक्खों की है और दूसरी सनातन धर्म्म की। ज़ैना क़दल के पास महाराजगंज में कई तिजारती चीज़ों की दुकानें हैं जिनमें कुछ मारवाड़ियों की भी हैं। शहर की सड़कें और गलियां जगह जगह पत्थरों से पटी हुई हैं, जिनको प्रायः काश्मीरी लोग मल मूत्र से परिपूर्ण रखते हैं। एक दिन मैंने यहां के एक निवासी से इस बात का कारण पूंछा जिसने एक अद्भुत उत्तर दिया। उत्तर को सुन कर मुझे बड़ा विस्मय हुआ और हंसी आई। उसने कहा, "यह हमारे देश का शुभ मुहूर्त है। जिसके दरवाजे हम ज्यादा मैला देखते हैं उसी के यहां वर की खोज करते हैं। मैला ज्यादा इकट्ठा देख कर हम लोग यह ख़्याल करते हैं कि इस दरवाजे के मालिक के यहां खाने को काफ़ी है।" यहां के निवासियों में इस प्रकार की कई अनोखी पुरानी प्रथाएं प्रचलित हैं, जिनका अब क्रमशः सुधार हो रहा है। शहर के समीप एक पहाड़ की चोटी पर महाराज शंकराचार्य्य जी का बनवाया हुआ एक प्राचीन शिवमन्दिर है। इसके ऊपर चढ़ने से सारे शहर का दृश्य देख पड़ता है। शहर के उत्तर की ओर हरि पर्व्वत नामक पहाड़ पर अकबर बादशाह का बनवाया हुआ एक क़िला है। शहर के

बड़े से बड़े महल से लगा कर छोटी से छोटी झोपड़ी में भी बिजली की रोशनी है। कारण इसका यह कि एक पहाड़ी झरने से बिजली उतपन्न की गई है जिसका खर्च बहुत थोड़ा है। बिजली की एक बत्ती के लिये प्रतिमास पांच या छः आने से अधिक नहीं देना पड़ते। सनातन-धर्म्म की धर्म्मशाला के सामने तथा अन्य कई स्थानों में अच्छे अच्छे बाग हैं। यहां अस्पताल, देवमन्दिर, तारघर, पोस्टआफिस, रेशम के कारखाने, मसजिदें और एक अजा-यबघर (जिसे लाल कोठरी कहते हैं) इत्यादि हैं। बैंकों में मुख्य कॉक्स बैंक, पञ्जाब नेशनल बैंक, और शिमला बैंक हैं।

काश्मीर नरेश अपने दरबारियों सहित छः महीने श्री-नगर में और छः महीने जम्मू में रहते हैं। यहां अनेक हाउसबोट, किचनबोट, शिकारे और मोटर-बोट हैं, जो सदैव झेलम पर तैरा करते हैं। पहले तीन की संख्या मेरे अनु-मान से इस प्रकार है :— हाउस बोट्स — ७५०, किचन बोट्स — १४००, और शिकारे — २५०० । काशमीर की जलवायु का आनन्द लेनेवाले महाशय हाउसबोट में रहा करते हैं। हाउसबोट का मासिक किराया उसकी योग्यता के अनुसार तीस, चालीस या पचास रुपये से लेकर दो सौ पचीस रुपये तक होता है। प्रत्येक हाउसबोट के साथ नि-त्यकर्म्मों के आवश्यक सामान सहित रसोई बनाने का एक

किश्चनबोट और हवा खाने के लिए एक शिकारा मिलता है। सन्ध्या के समय जब झेलम नदी में शिकारों की दौड़ होती है, और काश्मीर नरेश के महल से बिजली के प्रकाश की किरणें जल पर गिरती हैं, एक बायस्कोप का सीन दिखाई देता है। शुक्लपक्ष में पूर्ण चन्द्रोदय के समय शिकारे में बैठ कर जलविहार करने से अद्भुत आनन्द मिलता है। किसी किसी शिकारे में शहर के नवयुवक गाने की तान अलापते हैं। और प्रकृति के सौन्दर्य्य का आनन्द लूटते हैं। काश्मीर महाराज के कई हाउस-बोट्स तथा एक लम्ब देखने योग्य हैं, जो झेलम के दोनों तरफ़ पत्थर से बने हुए पक्के घाटों पर लगे रहते हैं। सारे प्रदेश में भोजपत्र, देवदार, चुनार, चीड़, और बेंत इत्यादि के पेड़ देखने में आते हैं। सेब, नाशपाती, आलू बुखारा, अञ्जीर, अंगूर, अखरोट और बादाम इत्यादि मेवा इतनी अधिकता से होती है कि यदि काश्मीर को मेवों की खान कहा जाय तो अनुचित न होगा। आजकल यहां मोटरों की बड़ी भरमार हो गई है; किसी सड़क पर देखिये, मोटर ही मोटर दिखाई देंगे। काश्मीरी स्त्री पुरुष अधिकतर सुडौल, बलिष्ट, गोरे और सुन्दर होते हैं। परिश्रमी होना भी इनमें एक गुण है। शोक केवल इतना है कि ये प्रायः मैले रहते हैं और बड़े निर्लज्ज होते हैं। सब से लज्जाजनक बात इनके स्नान

की है, क्योंकि स्त्री-पुरुष दोनों में बे-पर्दगी से स्नान करने की प्रथा है। मैं कई बार कई स्थानों में स्नान करने के लिए गया, परन्तु मुझे लज्जित हो कर लौटना पड़ा और अन्त में घर ही पर स्नान किया। यहां के देहाती (गाँव के) मनुष्य अपने सरल स्वभाव के लिए प्रसिद्ध हैं। ये लोग जाड़े के दिनों में आग से भरी हुई कण्डी गले में बांधे रहते हैं जो मिट्टी का एक प्रकार का छोटा सा बरतन होता है और जिस के ऊपर बेतों की बुनावट रहती है। कण्डी बांधने की प्रथा कदाचित् जाड़ा अधिक होने के कारण बन गई है। इस देश में साधारण श्रेणी के मनुष्य अधिकतर साग और भात खाते हैं। जाड़े के लिए कड़म नामक साग के पत्ते सुखा कर रख लिये जाते हैं और उसी के सहारे जाड़ा निर्वाह किया जाता है। यहां के मुसल्मान-निवासी अपने को ब्राह्मण बतलाते हैं और कहते हैं कि मुग़ल राज्य के समय बलात्कार उनका ब्रह्मणत्व छीन लिया गया था और ये यवन बना दिए गए थे। यदि यह बात सत्य है तो जो इस समय भी ब्राह्मणों की न्यून संख्या यहां देख पड़ती है और जिनने असह्य कष्टों और बिपत्तियों का सामना कर के अपने धर्म्म की रक्षा की है; उनके साहस और सहन-शीलता की प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जा सकता। ब्राह्मण लोग क्या स्त्री क्या पुरुष चाहे धनाढ्य हों या ग़रीब सभी मस्तक पर

चन्दन का तिलक लगाए रहते हैं। ब्राह्मणों के शरीरों पर यज्ञोपवीत भी पाया जाता है। इन के सुन्दर गोरे शरीरों पर तिलक और यज्ञोपवीत को देख कर हमारे देश के प्रत्येक हिन्दू के हृदय में भक्ति का सञ्चार हो जाता है। यदि किसी ब्राह्मण के छोटे बच्चे से भी जाति पूँछी जाय, तो वह अपना परिचय "पण्डित" कह कर देता है। ब्राह्मणों में बहुत से बड़े बड़े विद्वान् और ज्योतिषी भी हैं। ब्राह्मण और मुसल्मानों के अतिरिक्त तीसरी श्रेणी के मनुष्य यहाँ बहुत कम देखने में आते हैं।

श्रीनगर की भोग-विलास की सामग्री हमारे देश के बहुत से नव-युवकों को नष्ट कर डालती है। यहां ऐसे ऐसे मायावी दलाल हैं, जो धनाढ्यों को अपने चुङ्गल में फँसा लेते हैं और आरोग्यता प्राप्त करने के बदले वे अपने शरीर का सत्यानाश कर डालते हैं। मैंने अपने देश के कितने ही नव-युवकों को शोचनीय दशा में देखा है, जिन्हें फक़ीरी हालत में लौटना पड़ा है। इसलिए काश्मीर जानेवाले सज्जनों से मेरी प्रार्थना है कि वे वहां विशेष सावधानी से रहें। व्यापार में साग की बिक्री भी बहुत अधिक होती है। दूध, दही, घी, चावल, दाल, अचार इत्यादि खाने की चीज़ें बहुत अच्छी मिलती हैं। भेड़ें देखने में बड़ी सुन्दर मालूम होती हैं और किसी किसी भेड़ के चार सींग होते हैं। यहां नाक नामक

एक प्रकार का फल होता है जो काश्मीर के अतिरिक्त कहीं नहीं पाया जाता । यह इतना कोमल होता है, कि बहुत जल्दी गल जाता है और इसी कारण से कहीं बाहर नहीं भेजा जाता । ये फल आकार में नाशपाती की तरह होते हैं और स्वाद में सब मेवों में सर्वोत्तम समझे जाते हैं । स्त्री पुरुषों की पोशाक एक सी होती है अर्थात् गर्दन से पैर तक एक प्रकार का ढीला चोगा पहिने रहते हैं जिसमें दो आस्तीनों के सिवाय और कुछ नहीं होता । श्रीनगर में चुनार बाग नामक एक स्थान है, जहां चुनारों के बहुत से वृक्ष हैं । चुनारों की हवा नये खून को पैदा कर के शक्ति को बढ़ाती है इसलिए बहुत से अमीरों के हाउस-बोट सदा इस बाग के पास लगे रहते हैं । यहां हाउस-बोट लगा कर रहने में तीन या चार रुपये मासिक किराया देने पड़ते हैं । यहां से किश्तियां बारामूला और अनन्तनाग को आया जाया करती हैं । श्रीनगर प्राचीन समय से शाल दुशालों के लिए प्रसिद्ध है । एक दिन हम शाल दुशालों की दस्तकारी देखने के लिए निकले । दुकानों पर पहुंच कर जैसा हमने इनके विषय में सुना था वैसा ही पाया । दुकानों के एक कोने में कई कारीगर शाल, रूमाल, पलँग-पोश इत्यादि पर नक्काशी का काम कर रहे थे । इनके हस्थ-सञ्चालन की क्रिया को देख कर हमारा चित्त मुग्ध हो गया । कारीगरों के हाथ मशीन की

तरह चल रहे थे। दुकानों की सजावट अच्छी थी। इन को देख कर ऐसा मालूम होता था, मानों एग्ज़िबिशन (प्रदर्शिनी) खोली गई है। कारीगर नक़्क़ासी के काम में इतने दक्ष हैं, कि कठिन से कठिन नमूने को देख कर वैसा ही काम कपड़ों पर बनाने की शक्ति रखते हैं। कपड़ों की दुकानों को देख कर हम लकड़ी के कारख़ानों में पहुंचे। यहां हमने टेबिल, चेअर, इत्रदान लकड़ी के बाक्स इत्यादि अखरोट की लकड़ी से बनते हुए देखे, जिन पर नक़्क़ासी का बहुत सुन्दर काम था। मेरी धारणा है कि भारत में बहुत कम जगह यहां का सा लकड़ी की नक़्क़ासी का काम होता होगा। यहां बहुत से लकड़ी के कारख़ाने हैं। चांदी और सोने का काम भी यहां का प्रशंसनीय है। जून, जुलाई, अगस्त और सितम्बर के महीनों में काश्मीर की यात्रा विशेष आनन्ददायक होती है।

२२—श्रीनगर से विदाई।



श्रीनगर में लगभग एक पक्ष रहने के बाद हमने अपने घर लौटने का विचार किया, क्योंकि अब जाड़ा कुछ अधिक पड़ने लगा था। श्रीयुत पण्डित रमेशदत्त पाण्डे जी ने भी हमको बिदा होने की आज्ञा दे दी।

तारीख अट्ठारह सितम्बर को हमने स्वर्ग-भूमि काश्मीर की राजधानी श्रीनगर से जाने का निश्चय कर लिया और लोरी आफ़िस में जाकर तीन टिकट रावलपिण्डी की ख़रीदीं। मेरे नये मित्र पण्डित जी (बल्देव प्रसाद शास्त्री, काशी निवासी), मैं स्वयं तथा वाजपेयी जी लोरी पर सवार हुये और पहाड़ी रास्तों को पार करते हुए तारीख बीस सितम्बर को रावलपिण्डी आ पहुंचे । रावलपिण्डी में एक भी दिन न रह कर अमृतसर के लिए चल दिये । अमृतसर में दो तीन दिन हम पण्डित बल्देव प्रसाद जी के साथ रहे, परन्तु उनको कुछ आवश्यकीय कार्य्य होने के कारण कुछ दिन और रहना था; इसलिए मैंने उनको वहीं छोड़ दिया और वाजपेयी जी को साथ लेकर कानपुर के लिए यात्रा आरम्भ कर दी । मैं तारीख छब्बीस सितम्बर को कानपुर सकुशल आ पहुंचा। यहां मैं कुछ दिन रहा और काश्मीर के पहाड़ी मार्गों की भारी थकावटों को छोड़ कर अपनी जन्म-भूमि बङ्गाल के लिए विदा हुआ । जमालपुर पहुंच कर मैंने अपने पूज्य माता पिता के दर्शन किये और अपनी सारी यात्रा का इतिहास कह सुनाया। प्रिय पाठको, यद्यपि मेरी यह यात्रा यथार्थ में बङ्गाल से आरम्भ हुई थी परन्तु पुस्तकाकार बढ़ जाने के भय से बङ्ग देश की यात्रा का कुछ उल्लेख न देकर, कानपुर ही से यात्रा का वर्णन लिखा है ।

काश्मीर का अवशेष वर्णन ।



(१) प्राकृतिक ।

यह प्रदेश प्राकृतिक रूप से तीन भागों में विभक्त है—

भूमि (१) बाहरी पहाड़ियां और जम्मू जिले के मध्य के पर्व्वत ।

(२) काश्मीर का वह भाग जो विशेष कर पहाड़ों के मध्य में है ।

(३) दूरस्थित मध्य विशाल पर्व्वत जिनमें लद्दख, बाल्तिस्तान और गिलगिट के भाग मिले हुए हैं ।

प्रकृतिदेवी ने काश्मीर ऐसी सुख-समृद्धि-पूर्ण भूमि को

कष्ट भी कष्टों से वञ्चित नहीं रक्खा है । यहां के दैविक कष्ट आग लग जाना, पानी की बाढ़, भूकम्प, अकाल और महामारी हैं । आग लग जाने की सदा सम्भावना इसलिए रहती है कि श्रीनगर इत्यादि स्थानों मे मकान लकड़ी के बनाये जाते हैं और छतें छप्परदार होती हैं । इस बात के प्रमाण मौजूद हैं कि श्रीनगर शहर आज तक अठारह बार जल चुका है । सन् ८७९ ईसवी में खदनपर नामक पर्व्वत के एकाएक खिसक आने से

बारामूला के नीचे बड़ी भयङ्कर पानी की बाढ़ आई थी। यह बाढ़ काश्मीर के इतिहास में एक बड़ी प्रसिद्ध घटना है। परिणाम यह हुआ था कि झेलम नदी का मार्ग रुक गया जिसके कारण घाटियों का एक बहुत बड़ा भाग जल-मग्न हो गया था। इसके बाद और भी कई बाढ़ें आईं जिन में सन् १८४१, १८९३ और १९०३ की बाढ़ें उल्लेख करने योग्य हैं। सन् १८९३ की बाढ़ में श्रीनगर के सात पुलों में से छः पुल बह गये थे और २२२५ मकान नष्ट हो गये थे। सन् १९०३ की बाढ़ में डल झील और नहर के बीच का बांध टूट गया था जिसके कारण आध घण्टे में दस फ़ीट पानी बढ़ आया था। इस अवसर पर श्रीनगर के आस-पास के और शहर के लगभग दो तीन हज़ार मकान नष्ट हो गये थे और चालीस मील तक तांगों का रस्ता बन्द हो गया था। पन्द्रहवीं सदी से अब तक देश में ग्यारह बड़े बड़े भूकम्प हो चुके हैं। ये भूकम्प कुछ समय तक स्थायी रहे, जिसके कारण सैकड़ों मनुष्यों का जीवन समाप्त हो गया। उन्नीसवीं सदी में चार बड़े बड़े भयङ्कर भूकम्प हुए। इतिहास साक्षी है कि आज तक इस देश में उन्नीस बड़े बड़े भयङ्कर अकाल हो चुके हैं। सन् १८७८ के अकाल तथा १८९२ की महामारी में देश की जन-संख्या हजारों की तादाद में कम हो गई है। स्वास्थ्य की दृष्टि से श्रीनगर शहर बड़ी अपरिष्कार जगह

है और इसलिए उपरोक्त सारी विपत्तियों का केन्द्र अधिकतर श्रीनगर ही रहा है।

(२) भौगोलिक।

सीमा — उत्तर में काराकरुम पर्व्वत, पूर्व्व में चीनी तिब्बत, दक्षिण और पश्चिम में पञ्जाब प्रान्त तथा हज़ारा प्रदेश।

विस्तार — देश की लम्बाई पूर्व्व से पश्चिम तक ३५० मील, और चौड़ाई उत्तर से दक्षिण तक लगभग २७० मील है।

पर्व्वत तथा नदी — हिमालय पर्व्वत के पश्चिमी भाग का अधिकतर हिस्सा पञ्जाब के उत्तर में होने के कारण काश्मीर का सारा प्रदेश पर्व्वत श्रेणियों से भरा पड़ा है। दक्षिण के पर्व्वत हरी घास या जङ्गलों से आच्छादित रहते हैं और उत्तर के पर्व्वत श्वेत बर्फ से। पर्व्वतों की ऊँचाई चौदह से पन्द्रह हज़ार फीट तक है। यों तो बहुत सी छोटी छोटी नदियाँ इस देश से निकली हैं, परन्तु उनमें मुख्य सिन्धु और झेलम हैं। झेलम जिसे यहाँ वेहट कहते हैं, उत्तर से पश्चिम की ओर घाटियों में बहती है। कुछ दूर धीमे सर्प्पवत् बहाव के बाद श्रीनगर से २५ मील दक्षिण की ओर मैदानों में फैल जाती है, इसके पश्चात् साढ़े बारह

मील लम्बी और पाँच मील चौड़ी ऊलर नामक झील में गिरती है। इस झील से निकल कर झेलम बड़े बड़े ऊँचे पर्व्वतों के बीच से बहती हुई पञ्जाब की तरफ चली गई है।

वर्षा बहार व आबोहवा

वर्षा का समय अनिश्चित है। अधिकतर वर्षा बसन्त ऋतु के महीनों में होती है। अक्टोबर से मार्च तक आसपास की पहाड़ियों पर बर्फ गिरती है। जुलाई, अगस्त और सितम्बर में अधिक गर्मी होती है जब कि बायु यन्त्र का परिमाण ८५ डिग्री से ९५ डिग्री तक पहुँच जाता है। सब से अधिक ठंड जनवरी और फर्वरी में होती है जबकि कई सप्ताह तक गर्मी की गति १५ डिग्री फ्रीजिंग पाइन्ट (जल की वह दशा जब कि जल की स्थिति से बर्फ की स्थिति में परिवर्त्तन होता है) के नीचे तक हो जाती है। भारत वर्ष भर में श्रीनगर को छोड़ कर और कोई जगह स्वास्थ्य को अधिक अच्छा करने वाली नहीं समझी जाती है परन्तु अब यहां की भी स्थिति प्रति वर्ष खराब होती जा रही है। जून के महीने में अधिक गर्मी होने के कारण श्रीनगर के अधिकांश लोग गुलमुर्ग नामक पहाड़ी पर चले जाते हैं।

जङ्गली जानवर

जङ्गलों में बारहसिङ्घे तथा काले और भूरे रीछ पाए जाते हैं।

देश की मनुष्य संख्या पिछली मनुष्य गणना के अनुसार ३१ लाख ५८ हजार १ सौ २६ है।

निवासी

निवासियों में अधिक संख्या मुसल्मानों की है जिनके आचरण और भावों से पता लगता है कि किसी समय ये हिन्दू थे, मुग़ल सम्राटों के समय में मुसल्मान बना लिए गये हैं। हिन्दुओं की अधिक संख्या जम्मू में पाई जाती है और बौद्धों की लद्दख में। हिन्दुओं की छोटी सी रही सही संख्या में अधिकांश ब्राह्मण हैं, जिन्हें लोग पण्डित कह कर पुकारते हैं। यहां के निवासी प्राय: भूत प्रेतों में विश्वासी, डरपोक और झूठ बोलने वाले होते हैं। भारतवर्ष के दूसरे प्रान्तों की तरह यहां स्त्रियां खेतों में काम करती हुई नहीं पाई जातीं। घर के बहार का सब काम काज प्राय: मनुष्यों को ही करना पड़ता है। भारत-वर्ष के अन्य प्रान्तों में काश्मीरी स्त्रियां सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध हैं परन्तु यह बात असत्य है। यहां के बच्चे अवश्य बड़े सुन्दर और प्यारे मालूम होते हैं।

भाषा पञ्जाब से मिलती जुलती है परन्तु उसमें कुछ विशेषताएं हैं। इस देश की एक प्राचीन लिपि है, जिसे काश्मीरी कहते हैं और जिसमें देश के प्राचीन ग्रन्थ अब तक लिखे हुए पाये जाते हैं।

भाषा

जल की अधिकता के कारण चावल बहुत होता है जो

मील लम्बी और पाँच मील चौड़ी ऊलर नामक झील में गिरती है। इस झील से निकल कर झेलम बड़े बड़े ऊँचे पर्व्वतों के बीच से बहती हुई पञ्जाब की तरफ़ चली गई है।

वर्षा का समय अनिश्चित है। अधिकतर वर्षा बसन्त ऋतु के महीनों में होती है। अक्टोबर से मार्च तक आसपास की पहाड़ियों पर बर्फ़ गिरती है। जुलाई, अगस्त और सितम्बर में अधिक गर्मी होती है जब कि वायु यन्त्र का परिमाण ८५ डिग्री से ९५ डिग्री तक पहुँच जाता है। सब से अधिक ठंढ जनवरी और फ़र्वरी में होती है जबकि कई सप्ताह तक गर्मी की गति १५ डि ी फ़्रीजिंग पाइन्ट (जल की वह दशा जब कि जल की स्थिति से बर्फ़ की स्थिति में परिवर्त्तन होता है) के नीचे तक हो जाती है। भारत वर्ष भर में श्रीनगर को छोड़ कर और कोई जगह स्वास्थ्य को अधिक अच्छा करने वाली नहीं समझी जाती है परन्तु अब यहां की भी स्थिति प्रति वर्ष ख़राब होती जा रही है। जून के महीने में अधिक गर्मी होने के कारण श्रीनगर के अधिकांश लोग गुलमर्ग नामक पहाड़ी पर चले जाते हैं।

वर्षा बहार व आबोहवा

जङ्गलों में बारहसिङ्गे तथा काले और भूरे रीछ पाए जाते हैं।

जंगली जानवर

देश की मनुष्य संख्या पिछली मनुष्य गणना के अनुसार ३१ लाख ५८ हजार १ सौ २६ है।

निवासी

निवासियों में अधिक संख्या मुसल्मानों की है जिनके आचरण और भावों से पता लगता है कि किसी समय ये हिन्दू थे, मुग़ल सम्राटों के समय में मुसल्मान बना लिए गये हैं। हिन्दुओं की अधिक संख्या जम्मू में पाई जाती है और बौद्धों की लद्दाख में। हिन्दुओं की छोटी सी रही सही संख्या में अधिकांश ब्राह्मण हैं, जिन्हे लोग पण्डित कह कर पुकारते हैं। यहां के निवासी प्रायः भूत प्रेतों में विश्वासी, डरपोक और झूठ बोलने वाले होते हैं। भारतवर्ष के दूसरे प्रान्तों की तरह यहां स्त्रियां खेतों में काम करती हुई नहीं पाई जातीं। घर के बहार का सब काम काज प्रायः मनुष्यों को ही करना पड़ता है। भारत-वर्ष के अन्य प्रान्तों में काश्मीरी स्त्रियां सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध हैं परन्तु यह बात असत्य है। यहां के बच्चे अवश्य बड़े सुन्दर और प्यारे मालूम होते हैं।

भाषा पञ्जाब से मिलती जुलती है परन्तु उसमें कुछ विशेषताएं हैं। इस देश की एक प्राचीन लिपि है, जिसे काश्मीरी कहते हैं और जिसमें देश के प्राचीन ग्रन्थ अब तक लिखे हुए पाये जाते हैं।

भाषा

जल की अधिकता के कारण चावल बहुत होता है जो

उपज

कि मनुष्यों का साधारण भोजन है। मक्का गेहूं और जव भी पैदा होते हैं परन्तु अधिकता से नहीं। अंग्रेजी तरकारियां बहुत अच्छे प्रकार की और अधिकता से होती हैं। फल और मेवे देश भर में प्रत्येक जगह होते हैं, जो उत्तमता में इंग्लिस्तान में पैदा होने वाले मेवों से किसी प्रकार कम नहीं होते। मेवे और फल यहां से भारत-वर्ष के भिन्न भिन्न प्रान्तों में भेजे जाते हैं। जङ्गलों में देवदार इत्यादि के पेड़ हैं।

उद्योग तथा व्यापार

प्राचीन समय से श्रीनगर काश्मीरी शाल के व्यापार के लिए प्रसिद्ध है। इतिहास से पता लगता है कि यह व्यापार बाबर के समय आरम्भ हुआ था और उस समय एक एक दुशाला डेढ़ और दो हजार रुपये के मूल्य तक का बनाया जाता था। अब शाल और दुशालों की जगह अधिकतर दरियां क़ालीन और रेशम बनाया जाता है। यहां का लकड़ी की नक़्क़ाशी का काम प्रसिद्ध है।

(३) ऐतिहासिक।

राजतरङ्गिणी नामक एक संस्कृत इतिहास से पता लगता है कि प्राचीनकाल में अर्थात् दसवीं शताब्दी में इस देश में संग्रामदेव नामक एक हिन्दू राजा राज्य करता था।

इसके पश्चात् यह देश दो बार मुसल्मानों के अधिकार में आया। परन्तु इनसे फिर हिन्दू राजाओं ने जो कि बौद्ध थे छीन लिया। यहां के प्राचीन निवासी नागों के पूजक थे और यही कारण है कि देश में कई स्थानों का नाम नागों के नाम से प्रचलित है, जैसे बेरीनाग, अनन्तनाग इत्यादि। देश का शासन हिन्दुओं के हाथ से एक बार फिर निकल कर यवनों के हाथ में चला गया। सन् १५८८ ई० मे मुगल-सम्राट् अकबर ने इस देश पर अधिकार किया। इसके पश्चात् कई वर्षों तक अफ़ग़ान लोग शासन करते रहे। सन् १८१९ ई० में पञ्जाब केसरी महाराजा रणजीतसिंह (सिक्ख) ने देश को अफ़ग़ानों से छीन लिया। महाराजा रणजीतसिंह के समय आठ हिन्दू तथा सिक्ख और दो मुसल्मान गवर्नरों ने देश पर शासन किया। सन् १८४६ ई० में अंग्रेज़ और सिक्खों में द्वितीय सिक्खों की लड़ाई हुई और उसकी सन्धि की शर्तों के अनुसार इस देश का अंग्रेज़ों से सम्बन्ध हुआ। सन् १८५७ ई० में जम्मू के डोंगरा राजपूत सरदार गुलाब-सिंह का देहान्त हुआ, और उनका लड़का रणवीरसिंह गद्दी पर बैठा। सन् १८८५ ई० में रणवीरसिंह के मरने के बाद हमारे वर्त्तमान् नरेश महाराजा प्रतापसिंह गद्दी पर बैठे। आप का जन्म सन् १८५० ई० में हुआ था और आप इस समय बहुत सी उपाधियों से विभूषित हैं। आपका पूरा नाम लेफ़्टि-

जेण्ट जनरल हिज हाइनेस महाराजा प्रतापसिंह इन्द्र महेन्द्र बहादुर सिपर-ई-सल्तनत, जी. सी. एस. आई., जी. सी. आई. ई., जी. बी. ई., एल. एल. डी. हैं। आप ही के समय में गिलगिट काश्मीर प्रदेश में शामिल हुआ है। आपके मुख्य मन्त्री (चीफ मिनिस्टर) राजा सर दलजीतसिंह जी साहिब के. सी. ई., सी. एस. आई. हैं जो कि बड़े योग्य और उत्साहपूर्ण व्यक्ति हैं। देश का शासन भारत सरकार (गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया) के संरक्षण में है तथा ब्रिटिश गवर्नमेण्ट की ओर से एक रेजीडेण्ट प्रतिनिधि स्वरूप यहां रहता है। हमारे वर्त्तमान नरेश ही के समय में देश की सामाजिक अवस्था सुधरी है और शिक्षा तथा कला-कौशल की वृद्धि हुई है। राजधानी श्रीनगर तथा जम्मू दोनों स्थानों में ऋतु के अनुसार रहती है। कुछ समय पूर्व सरकार की ओर से केवल दो सौ पास वार्षिक वितरण किये जाते थे। जिससे साल भर में केवल दो सौ ही मनुष्य इस देश की यात्रा कर सकते थे। परन्तु अब पास बांटने की प्रथा उठा दी गई है और प्रत्येक मनुष्य इस देश की यात्रा कर सकता है। कोई रोक टोक न होने के कारण यात्रियों की संख्या प्रति वर्ष बढ़ती ही जाती है।

॥ इति ॥